# निर्वाणभूमियाँ

संयोजन

मुनि समतासागर

प्रकाशक

गुरुवर साहित्य प्रकाशन

**पावन प्रसंग**

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री समतासागरजी, मुनि श्री पुराणसागरजी, मुनि श्री अरहसागरजी एवं ऐलक श्री निश्चयसागरजी महाराज के जालना (महा.) चातुर्मास 2013 के प्रभावना पूर्ण अवसर पर प्रकाशित।


- कृति : निर्वाण भूमियाँ
- संयोजन : मुनि समतासागर
- संस्करण : प्रथम, मार्च, 2013
- आवृत्ति : 550
- प्रकाशक : गुरुवर साहित्य प्रकाशन
- पुण्यार्जक : महावीर एजेन्सीज
  सौ. उषाबाई-गुलाबचन्द जी
  सौ. कविता-धर्मेन्द्र जी
  पुत्र - गुंजन, खुशी, तनय
  सौ. प्रिया-अजितजी
  पुत्र - भूमि, अस्मित
  समस्त गंगवाल परिवार
  सदर बाजार-परतवाड़ा
  जिला-अमरावती (महा.)
  9422159555

# मनोगत

कल्याणक भूमियाँ परम मंगलकारी मानी गई हैं। जिसमें निर्वाणभूमियों का अपना महत्त्व है। फिर यदि तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि हो तो कहना ही क्या? वर्तमान चौबीसी के पाँच निर्वाण क्षेत्र प्रसिद्ध हैं। सामान्य केवलियों की निर्वाणभूमियों की भी अपनी महिमा है।

आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी ने प्राकृत में निर्वाणकाण्ड लिखकर सभी निर्वाणभूमियों की वन्दना की गई है। उस भाव वन्दना के फलस्वरूप अपने दु:खों के क्षय होने का भाव प्रकट किया है। आचार्य पूज्यपादस्वामी ने भी संस्कृत में नन्दीश्वर भक्ति में एवं निर्वाणभक्ति में ''निर्वाणभूमिरिहभारतवर्षजानाम्'' (श्लोक 21) लिखकर निर्वाणक्षेत्रों की वन्दना की है।

मेरे मन में बहुत समय से भाव था कि विदित सभी निर्वाण क्षेत्रों की परिचयात्मक एक सचित्र पुस्तक तैयार की जाये। सभी सामग्री संकलित ही है। आचार्यों द्वारा लिखित भक्तियों का आधार बनाकर स्वाध्यायी जनों की सुविधा और तीर्थों की महिमा बढ़ाने के लिए ही यह संयोजना की गई है। कृति की इस संयोजना में चित्र संग्रह कर पुस्तक को मूर्त रूप देने में ब्र. भरत भैया, सागर का विशेष योगदान उल्लेखनीय है। कृति के प्रकाशन में अर्थ सौजन्य कर्त्ता परिवार भी शुभाशीष के पात्र हैं।

तीर्थयात्रा और तीर्थवन्दना से जलवायु परिवर्तन के कारण

स्वास्थ्य लाभ, पूज्य पुरुषों की स्मृति, ऐतिहासिकता का बोध, सांस्कृतिक और भौगोलिक जानकारियाँ, दान-त्याग की प्रेरणा, मनःशान्ति, आत्म-संतोष, पवित्र परिणाम और पूजा भक्ति द्वारा अशुभ कर्मों का क्षय एवं सातिशय पुण्य के संचय जैसे महान् फल की प्राप्ति होती है।

इस श्रम-संयोजना से सभी जन लाभान्वित हों।

इसी शुभ भावना से .....

**मुनि समतासागर**

वीर निर्वाण दिवस ( दीपावली )

2012, चातुर्मास

जालना ( महा. )

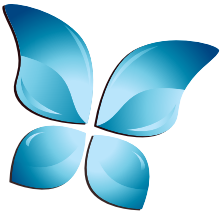

# अनुक्रमणिका


- निर्वाणकाण्ड 7
- निर्वाण काण्ड ( हिन्दी ) 12
- निर्वाणभूमियाँ 14


## पञ्चधाम परिचय


- अष्टापद ( कैलास ) पर्वत 25
- सम्मेदशिखर 28
- चम्पापुर ( मंदारगिरि ) 32
- ऊर्जयन्त ( गिरनार ) 33
- पावापुर 34


## सिद्धक्षेत्रों का परिचय

### बिहार एवं झारखण्ड प्रान्त


1. गुणावा 36
2. कमलदह 37
3. मन्दारगिरि 38
4. राजगृही 39
5. कोल्हुआ पहाड़ 40


### गुजरात प्रान्त


1. पावागढ़ 41
2. शत्रुंजय ( पालीताना ) 42
3. तारंगा 43
4. गिरनार 44


### मध्यप्रदेश


1. कुण्डलपुर ( कुण्डलगिरी ) 45
2. अहार 47

3. द्रोणगिरि 49
4. नैनागिरि ( रेशंदीगिरि ) 51
5. नेमावर ( सिद्धोदय ) 52
6. सिद्धवरकूट 53
7. ऊन ( पावागिरि ) 54
8. सोनागिरि 55
9. गोपाचल 56
10. बावनगजा ( चूलगिरि ) 57
11. मुक्तागिरि ( मेंढ्रगिरि ) 59

## महाराष्ट्र प्रान्त

1. कुंथलगिरि 60
2. मांगीतुंगी 61
3. गजपंथा 62

## उत्तरांचल एवं उत्तरप्रदेश

1. अष्टापद-कैलास ( बद्रीनाथ ) 63
2. मथुरा चौरासी 64
3. पावागिरि 65
4. शौरीपुर बटेश्वर 66

## उड़ीसा प्रान्त

खण्डगिरि - उदयगिरि 68
- निर्वाण कल्याणक ( मुक्ति प्राप्ति ) शास्त्रीय संदर्भों में 69
- सिद्धक्षेत्रों के पते 73
- मुनि श्री द्वारा रचित, अनुवादित एवं सम्पादित कुछ विशिष्ट कृतियों की दिग्दर्शिका 77
- गुरुवर साहित्य प्रकाशन समिति ( स्थायी स्तंभ ) 79
- अन्य प्राप्ति स्थान 79

# निर्वाणकाण्ड

## ( आचार्य कुन्दकुन्द विरचित )

अट्ठावयम्मि उसहो, चंपाए वासुपुज्जजिणणाहो।
उज्जंते णेमिजिणो, पावाए णिव्वुदो महावीरो॥ 1॥

**अर्थ :** अष्टापद ( कैलास पर्वत ) पर ऋषभनाथ, चम्पापुर में वासुपूज्य जिनेन्द्र, ऊर्जयन्तगिरि ( गिरनार पर्वत ) पर नेमिनाथ और पावापुर में महावीरस्वामी निर्वाण को प्राप्त हुए हैं।

वीसं तु जिणवरिंदा, अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा।
सम्मेदे गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ 2॥

**अर्थ :** जो देव और असुरों के द्वारा वंदित हैं तथा जिन्होंने समस्त क्लेशों को नष्ट कर दिया है, ऐसे बीस जिनेन्द्र सम्मेदाचल के शिखर पर निर्वाण को प्राप्त हुए हैं, उन सबको नमस्कार हो।

सत्तेव य बलभद्दा, जदुवणरिंदाण अट्ठकोडीओ।
गजपंथे गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥3 ॥

**अर्थ :** सात बलभद्र और आठ करोड़ यादववंशी राजा गजपंथा गिरि के शिखर पर निर्वाण को प्राप्त हुए हैं, उन्हें नमस्कार हो।

वरदत्तो य वरंगो, सायरदत्तो य तारवरणयरे।
आहुट्ठयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥ 4॥

**अर्थ :** वरदत्त, वरांग, सागरदत्त और साढ़े तीन करोड़ मुनिराज तारवर नगर में निर्वाण को प्राप्त हुए हैं, उन्हें नमस्कार हो।

णेमिसामी पज्जुण्णो, संबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो।
बाहत्तर कोडीओ, उज्जंते सत्तसया सिद्धा॥ 5॥

**अर्थ :** नेमिनाथ स्वामी, प्रद्युम्न, शंबुकुमार, अनिरुद्ध और बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि ऊर्जयंत गिरि पर सिद्ध हुए हैं।

रामसुआ विण्णि जणा, लाडणरिंदाण पंचकोडीओ।
पावागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥ 6॥

**अर्थ :** रामचन्द्र के दो पुत्र ( लव, कुश ) और लाट देश के पाँच करोड़ राजा पावागिरि के शिखर पर निर्वाण को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

पंडुसुआ तिण्णि जणा, दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ।
सत्तुंजयगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥ 7॥

**अर्थ :** पाण्डु के तीन पुत्र ( युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन ) और आठ करोड़ द्रविड़ राजा शत्रुंजयगिरि के शिखर पर निर्वाण को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

रामहणूसुग्गीवो, गवयगवक्खो य णील महणीला।
णवणवदीकोडीओ, तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे॥ 8॥

**अर्थ :** राम, हनुमान, सुग्रीव, गवय, गवाक्ष, नील, महानील तथा निन्यानवे करोड़ मुनिराज तुंगी पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए, उनकी मैं वंदना करता हूँ।

अंगाणंगकुमारा, विक्खापंचद्धकोडिरिसिसहिया ।
सुवण्णगिरिमत्थयत्थे, णिव्वाणगया णमो तेसि॥9॥

**अर्थ :** अंग और अनंगकुमार साढ़े पाँच करोड़ प्रसिद्ध मुनियों के साथ सोनागिरि के शिखर से निर्वाण को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

दसमुहरायस्स सुआ,कोडीपंचद्धमुणिवरे सहिया ।
रेवाउहयतडग्गे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥10 ॥

**अर्थ :** दशमुख राजा अर्थात् रावण के पुत्र साढ़े पाँच करोड़ मुनियों के साथ रेवा नदी के दोनों तटों से मोक्ष को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

रेवाणइए तीरे, पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे।
दो चक्की दह कप्पे, आहुट्ठयकोडि णिव्वुदे वंदे॥ 11॥

**अर्थ :** रेवा नदी के तीर पर पश्चिम भाग में स्थित सिद्धवरकूट पर दो चक्रवर्ती, दस कामदेव और साढ़े तीन करोड़ मुनिराज निर्वाण को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार करता हूँ।

वडवाणीवरणयरे, दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे।
इंदजियकुंभकण्णो, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥ 12॥

**अर्थ :** वड़वानी नगर के दक्षिण भाग में स्थित चूलगिरि के शिखर पर इंद्रजीत और कुंभकर्ण निर्वाण को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

पावागिरिवरसिहरे,सुवण्णभद्दाइ मुणिवरा चउरो ।
चेलणाणईतडग्गे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥ 13॥

**अर्थ :** चेलना नदी के तट पर पावागिरि के उत्कृष्ट शिखर पर सुवर्णभद्र आदि चार मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

फलहोडीवरगामे, पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे।
गुरुदत्ताइ मुणिंदा, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ 14॥

**अर्थ :** फलहोडी नामक उत्कृष्ट ग्राम के पश्चिम भाग में द्रोणगिरि के शिखर पर गुरुदत्त आदि मुनिराज निर्वाण को प्राप्त हुए,

उन्हें नमस्कार हो।

णायकुमारमुणिंदो, वालिमहावालि चेव अज्झेया।
अट्ठावयगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥ 15॥

**अर्थ :** नागकुमार मुनिराज, बालि और महाबालि कैलास पर्वत के शिखर पर निर्वाण को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

अच्चलपुरवरणयरे, ईसाणभाए मेंढ्रगिरिसिहरे।
आहुट्ठयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥ 16॥

**अर्थ :** अचलपुर (एलिचपुर) नामक उत्कृष्ट नगर की ऐशान दिशा में मेंढ्रगिरि (मुक्तागिरि) के शिखर पर साढ़े तीन करोड़ मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

वंसत्थलम्मि णयरे, पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरिसिहरे।
कुलदेसभूसणमुणी, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥17॥

**अर्थ :** वंशस्थल नगर के पश्चिम भाग में स्थित कुंथुगिरि (कुंथलगिरि) के शिखर पर कुलभूषण-देशभूषण मुनि निर्वाण को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

जसहररायस्स सुआ, पंचसया कलिंगदेसम्मि।
कोडिसिला कोडिमुणी, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥18॥

**अर्थ :** यशोधर राजा के पाँच सौ पुत्र और एक करोड़ मुनि कलिंग देश में स्थित कोटिशिला से निर्वाण को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

पासस्ससमवसरणे, गुरुदत्तवरदत्तपंचरिसिपमुहा।
रिस्सिंदीगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥ 19॥

**अर्थ :** भगवान् पार्श्वनाथ के समवसरण में गुरुदत्त, वरदत्त आदि पाँच मुनिराज रेशंदीगिरि (नैनागिरि) के शिखर पर निर्वाण

को प्राप्त हुए, उन्हें नमस्कार हो।

जे जिणु जित्थु तत्था, जे दु गया णिव्वुदिं परमं।
ते वंदामि य णिच्चं, तियरणसुद्धो णमंसामि ॥20॥

**अर्थ :** जो जिन जहाँ जहाँ से परम निर्वाण को प्राप्त हुए हैं, मैं उनकी वंदना करता हूँ तथा मन, वचन, काय से शुद्ध होकर, उन्हें नमस्कार करता हूँ।

सेसाणं तु रिसीणं, णिव्वाणं जम्मि जम्मि ठाणम्मि।
ते हं वंदे सव्वे, दुक्खक्खयकारणट्ठाए॥ 21 ॥

**अर्थ :** शेष मुनियों का निर्वाण जिस-जिस स्थान पर हुआ है, दुःखों का क्षय करने के लिए मैं उन सबको नमस्कार करता हूँ।

❑❑❑

## निर्वाण काण्ड ( हिन्दी )

वीतराग वन्दौं सदा, भाव सहित सिरनाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय॥ 1॥

### चौपाई

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुरि नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दौं भाव-भगति उर धार॥ 2॥
चरम तीर्थंकर चरम - शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखरसम्मेद जिनेश्वर बीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस॥ 3॥
वरदत्तराय अरु इन्द मुनिन्द, सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठकोडि, वन्दौं भावसहित कर जोड़ि॥ 4॥
श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोडि बहत्तर अरु सौ सात।
शम्बु प्रद्युम्न कुमार द्वयभाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय॥ 5॥
रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाडनरिन्द आदि गुणधीर।
पाँच कोडि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरी वन्दौं निरधार॥ 6॥
पाण्डव तीन द्रविड-राजान, आठ कोडि मुनि मुकति पयान।
श्री शत्रुंजयगिरि के सीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस॥ 7॥
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोडि मुनि औरहु भये।
श्रीगजपन्थ शिखर-सुविशाल, तिनके-चरण नमूँ तिहूँ काल॥ 8॥
राम हनू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील।
कोडि निन्यानवै मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वन्दौं धरि ध्यान॥ 9॥
नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोडि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि शीश, ते वन्दौं त्रिभुवनपति ईस॥ 10॥
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार।

कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास॥ 11॥
रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोडि वन्दौं भव पार॥ 12॥
बडवानी बडनयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दौं भव-सायर-तर्ण॥ 13॥
सुवरण भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर शिखर-मँझार।
चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास॥ 14॥
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणगिरि रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये वन्दौं नित तहाँ॥ 15॥
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्रीअष्टापद मुक्ति मँझार, ते वन्दौं नित सुरत सँभार॥16॥
अचलापुर की दिश ईशान, तहाँ मेंढ्रगिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय॥ 17॥
वंशस्थल वन के ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।
कुलभूषणदिशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम॥ 18॥
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूँ जोरि जुगपान॥ 19॥
समवसरण श्रीपार्श्व - जिनन्द, रेसिन्दीगिरी नयनानन्द।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम-जिहाज॥ 20॥
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ।
मनवचकायसहित सिरनाय,वन्दन करहिं भविकगुणगाय॥ 21॥
संवत सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वन्दन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल॥ 22॥

❑❑❑

# निर्वाणभूमियाँ

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे।
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपते; सम्मेदशैलेऽर्हताम्॥
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो।
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु मे मङ्गलम्॥

(मङ्गलाष्टक)

भावार्थ : भगवान् ऋषभदेव की कैलास पर्वत, महावीर स्वामी की पावापुर, वासुपूज्य स्वामी की चम्पापुर, नेमिनाथ स्वामी की ऊर्जयन्त (गिरनार) शिखर और शेष बीस तीर्थंकर जिन भगवन्तों की निर्वाण भूमि सम्मेदशिखर है। वैभव सम्पन्न वे सभी निर्वाण भूमियाँ मेरा कल्याण करें।

उड्ढ-मह-तिरियलोए सिद्धायदणाणी-णमस्सामि, सिद्ध-णिसीहियाओ, अट्ठावय-पव्वये, सम्मेदे, उज्जंते, चंपाए, पावाए, मज्झिमाए हत्थिवालियसहाए, जाओ अण्णाओ काओ वि-णिसीहियाओ, जीव-लोयम्मि, इसिपब्भार-तल-गयाणं, सिद्धाणं, बुद्धाणं, कम्म-चक्क-मुक्काणं, णीरयाणं, णिम्मलाणं, गुरु - आइरिय-उवज्झायाणं, पव्व-त्तित्थेर-कुलयराणं, चउवण्णो य, समण-संघो य, दससु भरहेरावएसु, पंचसु महाविदेहेसु, जे लोए संति-साहवो-संजदा, तवसी एदे, मम मंगलं, पवित्तं, एदेहं मंगलं करेमि, भावदो विसुद्धो सिरसा अहि-वंदिऊण सिद्धे काऊण अंजलिं मत्थयम्मि, तिविहं तियरणसुद्धो।(मुनि प्रतिक्रमण पाठ)

**भावार्थ :** ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और मध्यलोक के सिद्धायतनों को नमस्कार है, निर्वाण-स्थलों को, अष्टापद (कैलास) पर्वत, सम्मेदशिखर, ऊर्जयन्त (गिरनार), चम्पापुरी, पावापुरी, मध्यमा नगरी हस्तिपालक राजा की सभा में और भी जो कोई निषिद्धिका स्थान हैं, अढ़ाईद्वीप और दो समुद्रों में, ईषत्प्राग्भार मोक्ष शिला पर स्थित सिद्धों को, बुद्धों को, अष्टकर्मों से रहित, पापरहित, भावकर्म मल से रहित निर्मल गुरु, आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर और कुलकर तथा चार प्रकार के श्रमण संघ, ऋषि, यति, मुनि व अनगार, भरत-ऐरावत दस क्षेत्रों में, पाँच विदेह क्षेत्रों में और मनुष्य लोक में जो साधु संयमी तपस्वी हैं, ये सब मेरा पवित्र मंगल करें, इनको मैं विशुद्ध भाव से मस्तक झुकाकर, सिद्धों को नमस्कार करके, मस्तक पर अंजुली रखकर, त्रिविध मन-वचन-काय की शुद्धि से नमस्कार करता हूँ, इस प्रकार मैं मंगल करता हूँ।

❑❑❑

### नंदीश्वरभक्ति : आचार्य पूज्यपाद

**अस्यामवसर्पिण्यां, वृषभजिनः प्रथमतीर्थकर्ता भर्ता।**
**अष्टापदगिरिमस्तक, गतस्थितो मुक्तिमाप पापान्मुक्तः ॥29॥**

**भावार्थ :** इस हुण्डावसर्पिणी काल में जब तृतीय काल के तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष थे, तब युग के आदि तीर्थंकर वृषभदेव घातिया व अघातिया दोनों ही दुष्कर्मों का क्षय करके अष्टापद (कैलास) पर्वत के शिखर से पद्मासन से मुक्त हुए। वृषभदेव ने राज्यावस्था में प्रजा को असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प और कला इन षट्कर्मों को करने का उपदेश दिया था, अतः वे 'प्रजापति' कहलाते थे ।

श्रीवासुपूज्यभगवान् शिवासु पूजासु पूजितस्त्रिदशानाम्।
चम्पायां दुरित-हरः, परमपदं प्रापदापदा-मन्तगतः ॥30॥

भावार्थ : अतिशय शोभासम्पन्न सर्वकल्याणकारी गर्भ आदि पञ्च कल्याणक पूजाओं में देवों के परिवार के द्वारा पूजित, शत इन्द्रों से वन्दित, श्री प्रथम बालयति वासुपूज्य भगवान् संसार के समस्त दुःखों का अन्त करते हुए, अष्टकर्मों का क्षय करके चम्पापुर में 'मन्दारगिरि' पर्वत से परमोत्कृष्ट सिद्ध पद को प्राप्त हुए।

मुदितमतिबलमुरारि-प्रपूजितो जित कषायरिपुरथ जातः।
वृहदूर्जयन्त-शिखरे, शिखामणिस्त्रिभुवनस्य-नेमिर्भगवान्॥ 31॥

भावार्थ : राजा समुद्रविजय के पुत्र नेमिनाथ भगवान् थे तथा उनके छोटे भाई वसुदेव के पुत्र बलराम और श्रीकृष्ण थे। बलराम और श्रीकृष्ण, बलभद्र व नारायण पद के धारी थे। नेमिनाथजी के ये चचेरे भाई थे। आयु में भी नेमिनाथजी से बड़े थे तथापि बलराम और श्रीकृष्ण अपने कुल में तीर्थंकर का जन्म हुआ है यह विचार कर सदा नेमिनाथजी को देख प्रसन्नचित्त रहते थे तथा केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् भी सदा उनकी पूजा-वन्दना किया करते थे अर्थात् जो नेमिनाथ भगवान् श्रीकृष्ण व बलराम से पूज्य थे। जिन्होंने कषायों को जीत लिया था, ऐसे श्री नेमिनाथ भगवान् ऊर्जयन्त/ गिरनार/ रैवतक पर्वत के शिखर से मुक्ति को प्राप्त हुए।

पावापुरवरसरसां, मध्यगतः सिद्धिवृद्धितपसां महसाम्।
वीरो नीरदनादो, भूरि-गुणश्चारुशोभमास्पद-मगमत्॥ 32॥

भावार्थ : जो इच्छित कार्यों को पूर्ण करने में, उत्तमक्षमादि गुणों का उत्कर्ष करने में तथा अनशन आदि बारह महातपश्चरण

करने में महान् होने से सिद्धि, वृद्धि और तेजपुञ्ज हैं, जिनकी दिव्यध्वनि मेघों की गर्जना के समान है। जो अनन्त गुणों से युक्त हैं, ऐसे वर्तमान शासनकालीन तीर्थंकर महावीर पावापुरी के उत्कृष्ट सरोवर में स्थित हो, उत्तम श्रीशोभा सम्पन्न मुक्तिस्थल को प्राप्त हुए।

सम्मदकरिवन - परिवृत - सम्मेदगिरीन्द्रमस्तके विस्तीर्णे।
शेषा ये तीर्थकराः, कीर्तिभृतः प्रार्थितार्थसिद्धिमवापन्॥ 33॥

भावार्थ : जिनका यश सर्वत्र फैल रहा है, ऐसे अनन्तकीर्ति के स्वामी वृषभनाथ, वासुपूज्यजी, नेमिनाथ व महावीरस्वामी को छोड़कर शेष बीस तीर्थंकर विशाल, विस्तार को प्राप्त बड़े-बड़े हाथियों से घिरे हुए गिरिराज सम्मेदशिखर से मोक्ष पुरुषार्थ की उत्तम सिद्धि को प्राप्त हुए।

शेषाणां केवलिना - मशेषमतवेदिगणभृतां साधूनां।
गिरितलविवरदरीसरिदुरुवनतरु-विटपिजलधि-दहनशिखासु॥ 34॥
मोक्षगतिहेतु- भूत - स्थानानि सुरेन्द्ररुन्द्र - भक्तिनुतानि।
मङ्गलभूतान्येता - न्यङ्गीकृत - धर्मकर्मणामस्माकम्॥ 35॥

भावार्थ : तीर्थंकर केवलियों के अलावा उपसर्ग केवली, सामान्य केवली, अन्तकृत केवली, मूक केवली आदि सर्वकेवलियों, समस्त ( 363 ) अन्य मतों के ज्ञाता गणधर, मुनिवृन्दों के निर्वाण-स्थलों-पर्वतों के शिखर, बिल, गुफा, नदी, वन, वृक्षों की शाखा, समुद्र, अग्नि की ज्वालाओं में इन्द्रों के द्वारा स्तुति, नमस्कार को प्राप्त ऐसे समस्त मुक्तिस्थल, जिनकी स्तुति नमस्कार करने वालों को मुक्ति प्राप्त कराने वाली है, धर्म पुरुषार्थ में तत्पर रहने वाले हम भक्तजनों के पापों का क्षय करने में सहायक हो। अर्थात्

तीर्थंकर मुनियों की निर्वाण-भूमियों की वन्दना-नमस्कार करने से भव्यों के पापों का प्रक्षालन होता है तथा शीघ्र मुक्ति की प्राप्ति होती है।

जिनपतयस्तत्-प्रतिमा - स्तदालयास्तन्निषद्यका स्थानानि।
ते ताश्च ते च तानि च, भवन्तु भवघातहेतवो भव्यानाम्॥ 36॥

**भावार्थ :** जो भव्यात्मा जिनेन्द्रदेव, जिन-प्रतिमाओं, जिन-मन्दिर व जिनेन्द्रदेव के निर्वाण स्थलों की पूजा, आराधना, स्तुति-वन्दना आदि करते हैं वे संसार संतति का शीघ्र क्षयकर मुक्ति को प्राप्त करते हैं। अतः मुमुक्षु भव्य बन्धुओं को इनकी स्तुति, वन्दना, आराधना यथाशक्ति अवश्य करना चाहिए।

❑❑❑

## निर्वाण भक्ति : आचार्य पूज्यपाद

पद्मवनदीर्घिकाकुलविविध-द्रुमखण्डमण्डिते रम्ये।
पावानगरोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥ 16॥

**भावार्थ :** पुलाक, बकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ और स्नातक, इन पाँच प्रकार के मुनियों में केवलज्ञानी अरहंत देव स्नातक मुनि कहलाते हैं। ऐसे स्नातक सकल परमात्मा मुनि भगवान् महावीर ने कमलवन समूह से युक्त विशाल बावड़ी और अनेक प्रकार के वृक्षों के समूह से सुशोभित पावानगर के उद्यान में कायोत्सर्ग धारण किया।

कार्तिककृष्ण-स्यान्ते स्वातावृक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥ 17॥

**भावार्थ :** महावीर भगवान् ने कार्तिक माह में कृष्ण पक्ष की अमावस्या के दिन जब चन्द्रमा स्वाति नक्षत्र पर स्थित था, नाम-गोत्र-आयु और वेदनीय इन अघातिया कर्मों का पूर्ण क्षय करके

जन्म-जरा-मरण से रहित शाश्वत सुख रूप मुक्ति-पद को प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधाः ह्यथासु चागम्य।
देवतरु रक्तचन्दन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः ॥18॥
अग्नीन्द्राजिनदेहं मुकुटानलसुरभि - धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥ 19॥

**भावार्थ :** अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर के मुक्ति-प्राप्ति का समाचार जानकर चारों निकायों ( भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी व कल्पवासी ) के देवों ने शीघ्र ही पावानगर के उद्यान में पधारकर, जिनेन्द्रदेव की पूजा की तथा देवदारु, लालचन्दन, कालागरु और सुगन्धित गोशीर्ष चन्दनों से, अग्निकुमार देवों के इन्द्र के मुकुट से निकली अग्नि से तथा सुगंधित धूप और उत्तम मालाओं से भगवान् के शरीर का अन्तिम संस्कार किया। पश्चात् उन देवों ने गणधरों की दिव्य पूजा की। उसके बाद कल्पवासी देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश में स्थित ज्योतिर्मण्डल को, व्यन्तरदेव भूतारण्य एवं देवारण्य वनों को तथा भवनवासी देव अपने-अपने भवनों को चले गए।

इत्येवं भगवति वर्धमान चन्द्रे,
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनन्तं परमसुखं नृदेवलोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥ 20॥

**भावार्थ :** वर्धमान प्रभु के इस मंगल स्तोत्र को जो भव्यात्मा दोनों ही सन्ध्या कालों में पढ़ता है, वह मनुष्य और देवलोक के उत्तम

सुखों को भोगकर अन्त में अविनाशी, अक्षय, अनन्त मोक्ष पद के अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाणभूमिरिह भारतवर्षजानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥ 21॥

**भावार्थ :** इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र सम्बन्धी आर्यखण्ड में होने वाले 24 तीर्थंकरों की निर्वाणभूमियों, सामान्य केवलियों की निर्वाणभूमियों, गणधरों की निर्वाणभूमियों तथा श्रुतकेवलियों की निर्वाणभूमियों एवं अन्य सर्व मुनियों की जो-जो निर्वाणभूमियाँ हैं, उन सब मंगलमय भूमियों की स्तुति करने का इच्छुक मैं आज भक्तिपूर्वक निर्मल मन-वचन-काय से नमस्कार करता हूँ।

कैलास शैलशिखरे परिनिर्वृतोऽसौ,
शैलेशिभावमुपपद्य वृषो महात्मा।
चम्पापुरे च वसुपूज्यसुतः सुधीमान्,
सिद्धिं परामुपगतो गतरागबन्धः॥ 22॥

**भावार्थ :** अठारह हजार शीलों की पूर्णता होते ही ये 'शैलेशि भाव' से सम्पन्न इस युग के आदि तीर्थंकर श्री वृषभदेव कैलास-पर्वत से मुक्ति-पद को प्राप्त हुए तथा वीतरागी, केवलज्ञानी भगवान् वासुपूज्य ने चम्पापुर में उत्कृष्ट मोक्ष स्थल सिद्ध अवस्था को प्राप्त किया।

यत्प्रार्थ्यते शिवमयं विबुधेश्वराद्यैः,
पाखण्डिभिश्च परमार्थगवेष शीलैः।
नष्टाष्ट कर्म समये तदरिष्टनेमिः,
संप्राप्तवान् क्षितिधरे वृहदूर्जयन्ते॥ 23॥

**भावार्थ :** शाश्वत सुख के स्थान जिस मोक्ष को प्राप्त करने के लिये इन्द्रादिक देव भी सदा प्रार्थना/भावना करते रहते हैं। जिस मोक्ष की प्राप्ति की इच्छा परमार्थ के खोजी अन्य लिंगियों द्वारा भी की जाती उस परम स्थान को अठारह हजार शीलों की पूर्णता को प्राप्त अरिष्टनेमि/नेमिनाथ भगवान् ने अष्टकर्मों का क्षयकर 14 वें गुणस्थान में विशाल ऊर्जयन्त ( गिरनार पर्वत ) से प्राप्त किया। अर्थात् नेमिनाथ भगवान् गिरनार पर्वत से मुक्त हुए।

पावापुरस्य बहिरुन्नत भूमिदेशे,
पद्मोत्पलाकुलवतां सरसां हि मध्ये।
श्री वर्द्धमान जिनदेव इति प्रतीतो,
निर्वाणमाप भगवान्प्रविधूतपाप्मा॥ 24॥

**भावार्थ :** बिहार प्रान्त के पावापुर नगर के बाहर सूर्य की किरणों को प्राप्त कर विकसित होने वाले कमल और चन्द्रमा की शीतल किरणों को पाकर विकसित होने वाले कुमुदों से युक्त विशाल मनोहर तालाब के ठीक मध्य में ऊँचे टीले पर स्थित, केवलज्ञान से शोभा को प्राप्त सर्वाधिक प्रसिद्ध महावीर वर्धमान भगवान् समस्त कर्मों/समस्त पापों का नाश करके मुक्ति को पधारे।

शेषास्तु ते जिनवरा जितमोहमल्ला,
ज्ञानार्क भूरिकिरणैरवभास्य लोकान्।

स्थानं परं निरवधारित सौख्यनिष्ठं,
सम्मेद पर्वततले समवापुरीशाः ॥ 25 ॥

**भावार्थ :** शेष अजितनाथ आदि बीस तीर्थंकर मोह-शत्रु को पछाड़कर, केवलज्ञान रूपी किरणों से तीनों लोकों को प्रकाशित कर तीर्थराज सम्मेदशिखर से अनन्त सुख के उत्तम स्थान मुक्ति अवस्था को प्राप्त हुए।

आद्यश्चतुर्दशदिनैर्विनिवृत्त योगः,
षष्ठेन निष्ठितकृतिर्जिन वर्द्धमानः।
शेषाविधूत घनकर्म निबद्धपाशाः,
मासेन ते यतिवरांस्त्वभवन्वियोगाः ॥ 26 ॥

**भावार्थ :** आदि तीर्थंकर वृषभदेव ने आयु पूर्ण होने के चौदह दिनों पूर्व योगों का निरोध किया, अन्तिम तीर्थंकर वर्द्धमान स्वामी ने आयु पूर्ण होने के दो दिनों पूर्व योग निरोध किया तथा शेष 22 तीर्थंकरों ने आयु पूर्ण होने के एक माह पूर्व योगों का निरोध किया और सभी तीर्थंकर कर्मों के दृढ़ बन्धन को काटकर मोक्ष अवस्था को प्राप्त हुए।

**नोट :** यहाँ योग निरोध से तात्पर्य समवसरण का विघटन होना, विहार व दिव्यध्वनि को बन्द कर एक स्थान पर स्थित हो योग-धारण करना लेना चाहिए क्योंकि मन-वचन-काय रूप योगों का निरोध तो 14 वें अयोगी गुणस्थान में ही होता है।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा-
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः ॥ 27 ॥

**भावार्थ :** वचनों के स्तुतिमयी पुष्पों से गूँथी हुई सुन्दर आपके गुण रूपी मालाओं को मन रूपी हाथों से ग्रहण करके, चारों ओर बिखेरते हुए, हम 24 भगवान् की समस्त निर्वाणभूमियों की आदर सहित परिक्रमा करते हैं तथा उनसे ( भगवन्तों से ) शाश्वत सुख की स्थान सिद्धभूमि को प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं। हे प्रभो! सिद्ध भगवन्तों की निर्वाणभूमियों की भक्ति-पूर्वक वन्दना करने वाले हमें सिद्धपद की प्राप्ति हो।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः,
पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु सङ्गरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः ॥28॥
द्रोणीमति प्रबलकुण्डल मेंढ्रके च,
वैभारपर्वततले वरसिद्धकूटे।
ऋष्यद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च,
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च ॥29॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवो हतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन् ॥30॥

**भावार्थ :** घातिया-अघातिया कर्मों का क्षय करने वाले युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन ( तीनों भाई ) विशाल शत्रुञ्जय पर्वत से मुक्त हुए। बाह्य-अभ्यन्तर परिग्रहों से रहित बलदेव, तुंगीगिरि से मुक्त हुए। द्रव्य-भाव कर्मरूपी शत्रुओं का नाश करने वाले सुवर्णभद्र मुनिराज

नदी ( पावागिरि पर्वत के समीप - चेलना नदी ) के किनारे से मुक्त हुए। द्रोणागिरि पर्वत, कुण्डलाकार कुण्डलगिरि, मेंढ्रगिरि ( मुक्तागिरि ), वैभार पर्वत ( राजगृही की पंचम पहाड़ी ), उत्तम सिद्धवर कूट, श्रमणगिरि, विपुलाचल, बलाहक पर्वत, विन्ध्याचल, धर्म प्रकाशक पोदनपुर, सह्यपर्वत, अत्यधिक प्रसिद्ध हिमालय पर्वत, दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत पर जो-जो दिगम्बर मुनिजन शुभाशुभ कर्मों का क्षयकर मुक्त अवस्था को प्राप्त हुए हैं, लोक में ये सभी सिद्धक्षेत्र प्रसिद्धि ( पूज्यता ) को प्राप्त हुए हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्ता मयात्र परिनिर्वृति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः,
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्यसौख्याम्॥ 32॥

**भावार्थ :** इस प्रकार मैंने ( आचार्य पूज्यपाद ) घातिया कर्मों के नाशक, तीर्थप्रवर्तक तीर्थंकर जिन और पूर्ण शान्तभाव, पूर्ण साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों की निर्वाण स्थलियों का स्मरण किया है। वे मेरी भक्ति के आधार, भयमुक्त जिनेन्द्रदेव और शान्तरस में लीन मुनिवृन्द मुझे शीघ्र ही दोषरहित, विशुद्ध, बाधा रहित सुख से सहित ऐसी उत्तम गति-मोक्ष गति को प्रदान करें।

❑❑❑

# पञ्चधाम परिचय

## अष्टापद ( कैलास ) पर्वत

भगवान् ऋषभदेव का निर्वाण अष्टापद पर्वत से हुआ। अष्टापद को ही अनेक स्थानों पर कैलास पर्वत भी कहा गया है। इसलिए कैलास और अष्टापद दोनों स्थान भिन्न-भिन्न न होकर एक ही हैं।

कैलास पर्वत सिद्धक्षेत्र है। यहाँ से अनेक मुनियों ने निर्वाण प्राप्त किया है। भगवान् ऋषभदेव के अतिरिक्त भरत आदि भाइयों ने, भगवान् अजितनाथ के पितामह त्रिदशञ्जय, व्याल, महाव्याल, अक्षयकुमार, अच्छेद्य, अभेद्य, नागकुमार हरिवाहन, भगीरथ आदि असंख्य मुनियों ने कैलास पर्वत पर आकर तपस्या की और कर्मों को नष्ट करके यहीं से मुक्त हुए।

भगवान् ऋषभदेव की स्मृति में भरत चक्रवर्ती ने 72 जिनालय बनवाये और उनमें रत्नों की प्रतिमायें विराजमान करायीं। ये प्रतिमायें और जिनालय सहस्त्रों वर्षों तक वहाँ विद्यमान रहे। सगर चक्रवर्ती के आदेश से उनके साठ हजार पुत्रों ने उन मन्दिरों की रक्षा के लिये उस पर्वत के चारों ओर परिखा खोद कर गंगा को वहाँ बहाया। बालि मुनि यहीं तपस्या कर रहे थे। रावण उन्हें देखकर बड़ा क्रुद्ध हुआ और जिस पर्वत पर खड़े वे तपस्या कर रहे थे, उस पर्वत को ही उलट देना चाहा। तब बालि मुनि ने सोचा - चक्रवर्ती भरत ने यहाँ जो जिन मन्दिर बनवाये थे, वे इस पर्वत के चलित होने से कहीं नष्ट न हो जायें, यह विचार कर पर्वत को उन्होंने अपने पैर के अंगूठे से दबा दिया, जिससे रावण उस पर्वत के नीचे दबकर बहुत जोर से रो

पड़ा। इस घटना से यह सिद्ध होता है कि भरत द्वारा निर्मित ये मन्दिर और मूर्तियाँ रावण के समय तक तो अवश्य ही थीं।

**कैलास की आकृति** - कैलास की आकृति ऐसे लिंगाकार की है, जो षोडश दल कमल के मध्य खड़ा हो। इन सोलह दल वाले शिखरों में सामने के दो शिखर झुक कर लम्बे हो गए हैं। इसी भाग से कैलास का जल गौरीकुण्ड में गिरता है। कैलास इन पर्वतों में सबसे ऊँचा है। उसका रंग कसौटी के ठोस पत्थर जैसा है, किन्तु बर्फ से ढके रहने के कारण वह रजत वर्ण दिखायी पड़ता है। दूसरे शृंग कच्चे लाल मटमैले पत्थर के हैं। मानसरोवर की ओर से इसकी चढ़ाई डेढ़ मील की है, जो बहुत कठिन है। कैलास के शिखर के चारों कोनों में ऐसी मन्दिराकृतियाँ स्वत: बनी हुई हैं, जैसे बहुत से मन्दिर के शिखरों पर चारों ओर बनी होती हैं।

तिब्बत की ओर से यह पर्वत ढलान वाला है। उधर तिब्बतियों के बहुत मन्दिर बने हुये हैं। तिब्बत के लोगों में कैलास के प्रति बड़ी श्रद्धा है। अनेक तिब्बती तो इसकी बत्तीस मील की परिक्रमा दण्डवत् प्रणिपात द्वारा लगाते हैं। लिंग-पूजा इस शब्द का प्रचलन तिब्बत से ही प्रारम्भ हुआ। तिब्बती भाषा में लिंग का अर्थ क्षेत्र या तीर्थ है। अत: लिंग-पूजा का अर्थ तिब्बती भाषा में तीर्थ पूजा है।

**कैलास और अष्टापद** - प्राकृत निर्वाण भक्ति में 'अट्ठावयम्मि उसहो' अर्थात् ऋषभदेव की निर्वाण भूमि अष्टापद बतायी है, किन्तु संस्कृत निर्वाण भक्ति में अष्टापद के स्थान पर कैलास को ऋषभदेव की निर्वाण भूमि माना है -

''कैलाशशैलशिखरे परिनिर्वृतोऽसौ, शैलेशिभावमुपपद्य

वृषो महात्मा।'' संस्कृत निर्वाण भक्ति में एक श्लोक में निर्वाण क्षेत्रों का उल्लेख करते हुए कहा है - ''सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे।'' इसमें सम्पूर्ण हिमालय को ही निर्वाण क्षेत्र माना है।

एक ही स्थान के लिये आचार्यों ने तीन नाम दिये हैं। इससे लगता है, ये तीनों नाम समानार्थक और पर्यायवाची हैं। कहीं-कहीं हिमवान् के स्थान पर धवलगिरि शब्द का प्रयोग मिलता है। यदि यह मान्यता सही है कि ये सब नाम पर्यायवाची हैं तो कैलास या अष्टापद कहने पर हिमालय में भागीरथी, अलकनंदा और गंगा तटवर्ती बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री से लेकर नर-नारायण, द्रोणगिरि, गौरीशंकर, नन्दा, त्रिशूली और मुख्य कैलास यह सम्पूर्ण प्रदेश ही निर्वाण क्षेत्र हो जाता है।

हिमालय में स्थित तीर्थों को ध्यानपूर्वक देखने से इस मान्यता का समर्थन होता है। भगवान् ऋषभदेव के पिता नाभिराय ने बद्रीनाथ मन्दिर के पीछे वाले पर्वत पर तपस्या की थी वहाँ उनके चरण विद्यमान हैं। भगीरथ ने कैलास पर्वत पर जाकर शिवगुप्त नामक मुनि से दीक्षा ली थी और उन्होंने गंगा-तट पर तपस्या की थी। इन्द्र ने क्षीरसागर के जल से भगीरथ मुनि के चरणों का अभिषेक किया था। उस चरणोदक का प्रवाह गंगा में जाकर मिल गया। तभी से गंगा नदी लोक में तीर्थ मानी जाने लगी। उन महामुनि भगीरथ ने गंगा तट पर जिस शिला पर खड़े होकर तपस्या की थी, वह शिला भगीरथ-शिला कहलाने लगी। वह अब भी विद्यमान है। भगीरथ की तपस्या का यह वर्णन जैन शास्त्रों में मिलता है।

बद्रीनाथ मन्दिर की मूर्ति भगवान् ऋषभदेव की है। इससे

इस तथ्य पर प्रकाश पड़ता है कि चक्रवर्ती भरत ने जिन 72 जिन-मन्दिरों का निर्माण कराया था, वह केवल कैलास में नहीं, अपितु सारे हिमालय में विभिन्न स्थानों पर कराया था।

( जैनधर्म का प्राचीन इतिहास, पृ. 69, 70 )

## सम्मेदशिखर

शाश्वत सिद्धभूमि तीर्थराज सम्मेदशिखर के पाद प्रान्त में बसा ईसरी नगर सम्मेदशिखर का प्रवेश द्वार है। यहाँ रेल्वे स्टेशन का नाम पारसनाथ है, यहाँ उतरना चाहिए। यहाँ तेरापंथी और बीसपंथी दो धर्मशालाएँ हैं। उदासीन आश्रम, शान्तिनिकेतन परिसर भी है। यहाँ से सम्मेदशिखर पर्वत दिखाई देता है। बस या टैक्सी द्वारा पहाड़ की तलहटी मधुवन पहुँचना चाहिए। ईसरी से मधुवन 22 कि. मी. है। ईसरी में चार दिगम्बर जैन मन्दिर हैं।

मधुवन में तेरापंथी और बीसपंथी कोठियों के अधीन कई धर्मशालाएँ हैं। दिगम्बर जैन मन्दिर भी अनेक हैं, जो सुंदर और दर्शनीय हैं।

सम्मेदाचल महापवित्र तथा अत्यन्त प्राचीन सिद्धक्षेत्र है। यह अनादि तीर्थ माना जाता है। इसकी वंदना करना प्रत्येक जैन अपना अहोभाग्य समझता है। अनन्तों तीर्थंकर भगवान् अपनी अमृतवाणी और दिव्यदर्शन से इस तीर्थ को पवित्र बना चुके हैं। अनन्तानन्त मुनिगण यहाँ से मुक्त हुए हैं। इस युग के 20 तीर्थंकर भी यहीं से मोक्ष पधारे। मधुकैटभ जैसे दुराचारी प्राणी भी यहाँ के पवित्र वातावरण में आकर पवित्र हो गए और स्वर्ग सिधारे। निःसंदेह इस तीर्थराज की महिमा अपार है। इन्द्रादिक देव भी इसकी वंदना करके

ही अपना जीवन सफल हुआ समझते हैं। यदि कोई भव्य जीव इस तीर्थ की यात्रा-वंदना भाव सहित करे तो उसे पूरे पचास भव भी धारण नहीं करने पड़ते। इस क्षेत्र का इतना प्रबल प्रभाव है कि वह 49 भवों में ही संसार भ्रमण से छूटकर मोक्षलक्ष्मी का अधिकारी होता है। पं. द्यानतरायजी ने तो यहाँ तक कहा है -

एक बार वंदे जो कोई। ताहि नरक पशुगति नहीं होई॥

इस गिरिराज की वंदना करने से परिणामों में निर्मलता आती है। फलतः कर्मबंध कम होता है, आत्मा में वह पुनीत संस्कार अत्यन्त प्रभावशाली हो जाता है कि जिससे पाप-पंक में वह गहरा नहीं फँसता है। दिनोंदिन परिणामों की विशुद्धि होने से एक दिन वह प्रबल पौरुष प्रकट होता है, जो उसे आत्म स्वातंत्र्य अर्थात् मुक्ति दिलाता है। सम्मेदाचल की वंदना करते समय इस धर्म सिद्धान्त का ध्यान रखें और बीस तीर्थंकरों के जीवन चरित्र और गुणों में अपना मन लगाए रखें।

इस सिद्धाचल पर सौधर्म इन्द्र ने आकर जिनेन्द्र भगवान् के निर्वाण स्थल चिह्नित कर दिए थे, उन स्थानों पर चरण चिह्न सहित सुन्दर टोंक निर्मित की गई थीं। कहते हैं कि सम्राट् श्रेणिक के समय में वे अति जीर्ण अवस्था में थीं। यह देखकर उन्होंने स्वयं उनका जीर्णोद्धार कराया और भव्य टोंक निर्मित करा दी। कालदोष से वे भी नष्ट हो गईं। जिस पर अनेक दानवीरों ने अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग जीर्णोद्धार में लगाकर किया। सन् 1678 में यहाँ पर दिगम्बर जैनों का एक महान् जिनबिम्ब प्रतिष्ठोत्सव हुआ था। पहले पालगंज के राजा इस तीर्थ की देखभाल करते थे। बाद में दिगम्बर

जैनों का यहाँ जोर हुआ, किन्तु मुसलमानों के आक्रमण में यहाँ का मुख्य मन्दिर नष्ट हो गया। तब एक स्थानीय जमींदार भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा को अपने घर उठा ले गया। वह यात्रियों से कर वसूल करके उनको दर्शन कराता था। सन् 1820 ईस्वी में कर्नल मैकेंजी ने अपनी आँखों से यह दृश्य देखा था। पर्याप्त यात्रियों के एकत्र होने पर वह कर वसूल करके दर्शन कराता था। जो कुछ भेंट चढ़ती थी, सब वह ले लेता था। पार्श्वनाथ की टोंक वाले मन्दिर में दिगम्बर जैन प्रतिमा ही प्राचीनकाल से रही है। अब दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदायों के जैन इस तीर्थ को पूजते हैं और मानते हैं।

ऊपर वाली कोठी से ही पर्वत-वंदना का मार्ग प्रारम्भ होता है। मार्ग में लंगड़े-लूले-अपाहिज मिलते हैं, दया भाव से जिनको देने के लिए कुछ द्रव्यादि सामग्री साथ में ले लेना चाहिए। वंदना प्रातः 4 बजे से प्रारम्भ करनी चाहिए। 3कि.मी. चढ़ाई चढ़ने पर गंधर्व नाला पड़ता है। फिर डेढ़ कि.मी. आगे चढ़ने पर दो मार्ग हो जाते हैं। बाईं तरफ का मार्ग पकड़ना चाहिए, क्योंकि वह सीता नाला होकर गौतम स्वामी की टोंक को गया है। दूसरा रास्ता पार्श्वनाथ की टोंक से आता है। सीता नाला में पूजन सामग्री धो लेनी चाहिए। यहाँ से डेढ़ कि.मी.चढ़ाई है। प्रथमतया चौपड़ा कुण्ड पर पार्श्वप्रभु के दर्शनकर आगे बढ़ते हुए पहले गणधर गौतम स्वामी की टोंक की वंदना करके बाएँ हाथ की तरफ वंदना करने जाना चाहिए। तत्पश्चात् कुन्थुनाथ टोंक ( ज्ञानधर कूट ), नमिनाथ टोंक ( मित्रधर कूट ), अरनाथ टोंक ( नाटक कूट ), मल्लिनाथ टोंक ( संबल कूट ), श्रेयांसनाथ टोंक ( संकुल कूट ), पुष्पदन्त टोंक ( सुप्रभ कूट ), पद्मप्रभ टोंक ( मोहन कूट ), मुनिसुव्रत टोंक ( निर्जर कूट ) फिर चन्द्रप्रभ टोंक ( आनन्द

कूट ) जो बहुत ऊँची है। आदिनाथ टोंक, शीतलनाथ टोंक ( विद्युतवर कूट ), अनन्तनाथ टोंक ( स्वयंप्रभ कूट ), सम्भवनाथ टोंक ( धवल कूट ), वासुपूज्य टोंक, अभिनन्दन टोंक ( आनन्द कूट ) से उतरकर तलहटी में जल मंदिर में जाते हैं और फिर गौतमस्वामी की टोंक पर पहुँचकर पश्चिम दिशा की ओर वन्दना करने जाते हैं। जिसमें धर्मनाथ टोंक ( सुदत्तवर कूट ), सुमतिनाथ टोंक ( अविचल कूट ), शान्तिनाथ टोंक ( कुन्दप्रभ कूट ), महावीर टोंक, सुपार्श्वनाथ टोंक ( प्रभास कूट ), विमलनाथ टोंक ( सुबीर कूट ), अजितनाथ टोंक ( सिद्धवर कूट ), नेमिनाथ स्वामी टोंक और अंत में भगवान् पार्श्वनाथ की टोंक ( स्वर्णभद्र कूट ) पर पहुँचते हैं। यह टोक सबसे ऊँची है और यहाँ का प्राकृतिक दृश्य बड़ा सुहावना है। यहाँ पहुँचते ही यात्री अपनी थकावट भूल जाता है और जिनेन्द्र पार्श्व की चरण वंदना करते ही आत्माह्लाद में निमग्न हो जाता है। यहाँ दर्शन-पूजन, सामायिक करके लौट आना चाहिए। रास्ते में व्यवस्था कमेटियों की ओर से जलपान का प्रबन्ध होता है। पर्वत, समुद्र तल से लगभग 1500 मीटर ऊँचा है। इस पर्वतराज का प्रभाव अचिन्त्य है। कुछ भी थकावट मालूम नहीं होती है। नीचे मधुवन में लौटकर वहीं के मन्दिरों के दर्शन करके भोजनादि करना चाहिए। मनुष्य जन्म पाने की सार्थकता तीर्थयात्रा करने में है और सम्मेदाचल की वंदना करके भक्त श्रद्धालु कृतार्थ हो जाता है।

इस क्षेत्र पर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा 16 फरवरी, 1983 में निशंकसागर, समतासागरजी आदि 7 ऐलक दीक्षाएँ प्रदान की गईं।

## चम्पापुर ( मंदारगिरि )

गुणावा से नवादा ( पूर्व रेल्वे ) केवल दो-ढाई किलोमीटर है। यहाँ पहुँचकर नाथनगर जाना चाहिए। नाथनगर स्टेशन से 1 कि.मी. से कुछ कम दूरी पर धर्मशाला है। वहाँ आवास की अच्छी व्यवस्था है। धर्मशाला में मन्दिर भी है तथा क्षेत्र का कार्यालय भी। खुला चौक पार करने पर पुराना दिगम्बर जैन मन्दिर है। दो प्राचीन मानस्तम्भ भी बने हैं। नाथनगर ही प्राचीन चम्पापुर है। यहाँ बारहवें तीर्थंकर भगवान् वासुपूज्य के पाँचों कल्याणक हुए थे। केवल यही एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ किन्हीं तीर्थंकर के पाँचों कल्याणक हुए हों। यह अतीत में भारत का अति प्रसिद्ध सांस्कृतिक नगर रहा है। भगवान् ऋषभदेव द्वारा स्थापित 52 जनपदों में से अंग जनपद की राजधानी होने का इसे गौरव प्राप्त था। बौद्ध युग में इसकी गणना छह महानगरियों में की जाती थी।

यहीं पर कभी प्रख्यात हरिवंश की स्थापना हुई थी। यह नगर गंगातट पर बसा हुआ था, जहाँ धर्मघोष मुनि ने समाधिमरण किया था। गंगा नदी के एक नाले पर जिसका नाम चंपानाला है, एक प्राचीन जिन मन्दिर दर्शनीय है। नाथनगर के निकट तीन दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। यह सिद्धक्षेत्र है, यहाँ से पद्मरथ, अंचल, अशोक आदि अनेक मुनि मुक्त हुए हैं।

मंदारगिरि भागलपुर से 49 कि.मी.दूर है। यह भगवान् वासुपूज्य का तप और मोक्ष कल्याणक स्थान है। भागलपुर से मंदारगिरि को रेल और बस दोनों जाती हैं। गाँव का नाम बौंसी है। रेल्वे स्टेशन के सामने बस स्टेण्ड से आधे किलोमीटर की दूरी पर दिगम्बर जैन धर्मशाला है, क्षेत्र का कार्यालय भी यहीं है। क्षेत्र

कार्यालय से मंदारगिरि पर्वत 3 कि.मी. है। तलहटी से पर्वत की चढ़ाई डेढ़ कि.मी. से कुछ अधिक है। रास्ते में मंदिर और जलकुण्ड हैं। पर्वत शिखर पर दो बड़े मंदिर हैं - 'बड़ा दिगम्बर जैन मन्दिर' और 'छोटा दिगम्बर जैन मन्दिर'। पास ही एक गुफा भी है। तीन जगह भगवान् वासुपूज्य के चरण चिह्न अंकित हैं। हिन्दू मान्यता के अनुसार समुद्र मंथन के समय इसी पर्वत ( मंदराचल ) को राई ( मथानी ) बनाया गया था।

## ऊर्जयन्त ( गिरनार )

गिरनार बहुत महत्त्व का तीर्थक्षेत्र है। आचार्य वीरसेन स्वामी ने श्री धवल टीका में इसे मंगल क्षेत्र माना है। इसमें बाइसवें तीर्थंकर भगवान् नेमिनाथ के तीन कल्याणक ( दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण ) हुए हैं। इस निर्वाण क्षेत्र पर आचार्य धरसेनस्वामी ने अपना समाधि का समय निकट जानकर पुष्पदन्त और भूतबली मुनिराज को महाकर्म प्रकृति प्राभृत ( षट्खण्डागम सूत्रों ) का ज्ञान देकर श्रुत संरक्षण का महनीय कार्य किया था।

गिरनार, जूनागढ़ से केवल 5 कि.मी. है। जूनागढ़ में बंडीलाल दिगम्बर जैन कारखाना नाम से क्षेत्र का कार्यालय है, इसी में मंदिर और मानस्तम्भ भी है। यही बड़ी धर्मशाला है। धर्मशाला से कुछ दूर चलने पर पहाड़ पर चढ़ने की सीढ़ियाँ शुरु हो जाती हैं। 4400 सीढ़ियाँ चढ़कर पहली टोंक है। यहाँ पर 4 दिगम्बर जैन मन्दिर और दिगम्बर जैन धर्मशाला है। निकट ही राजुल गुफा है। कहा जाता है कि राजुलमती ने यहीं तपस्या की थी। गुफा अंधेरी है और बैठकर जाना पड़ता है, फिर 109 सीढ़ी चढ़कर गोमुख कुण्ड आता है। वहाँ

पर दीवार में 24 चरण बने हुए हैं ( यहाँ से एक रास्ता सहस्राम्र वन को 1499 सीढ़ियों द्वारा जाता है। आमतौर पर लौटते समय यात्री इस ओर जाते हैं। गोमुख से आगे खंगार का किला और अनेक श्वेताम्बर मन्दिर हैं। पहली टोंक से 100 सीढ़ी चढ़कर अनिरुद्धकुमार की टोंक और निकट में अंबादेवी ( हिन्दू मन्दिर ) है, फिर 700 सीढ़ी चढ़कर शंभुकुमार की टोंक और उसके बाद 2500 सीढ़ी चढ़कर पाँचवीं टोंक भगवान् नेमिनाथ की है। ( यहाँ हिन्दू साधु बैठे रहते हैं ) चौथी टोंक प्रद्युम्नकुमार की है। उसके लिए सीढ़ी नहीं है और चढ़ाई कठिन है। महिला, बच्चों और वृद्धों के लिए जोखिम का रास्ता है।

इस प्रकार भगवान् नेमिनाथ की टोंक तक पहुँचने में 9999 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। वापसी में पहली टोंक से 1499 सीढ़ियों द्वारा सहस्राम्र वन जाते हैं। यहाँ डोली मिल जाती है। यात्रा भाड़ा सवारी के बोझ के अनुसार होता है। जूनागढ़ शहर में भी ऊपर कोट के पास दिगम्बर जैन धर्मशाला और मन्दिर हैं।

## पावापुर

पावापुरी अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी की निर्वाण भूमि है, अतः यह सिद्धक्षेत्र है। यह स्थान राजगृही से 24 कि. मी. है। इसका प्राचीन नाम अपापापुर ( पुण्यभूमि ) है। जिस स्थल पर भगवान् ने निर्वाण प्राप्त किया वहाँ पर पद्म सरोवर नामक एक विशाल सरोवर है। यह दो फर्लांग लम्बा और लगभग इतना ही चौड़ा है। कहते हैं किसी समय यह सरोवर चौरासी बीघे में फैला हुआ था। किंवदन्ती के अनुसार भगवान् के निर्वाण के समय असंख्य देव-देवियाँ और नर-नारी यहाँ एकत्र हुए थे। भगवान् का निर्वाण होने पर

उपस्थित जनसमूह ने भक्तिभाव से विह्वल हो, उस स्थान की धूल मस्तक पर धारण की। हर एक ने केवल एक चुटकी धूल ली, पर भीड़ इतनी अधिक थी कि एक-एक चुटकी धूल लेने से ही यहाँ सरोवर बन गया।

पद्म सरोवर के मध्य में श्वेत संगमरमर का एक जैन मन्दिर है। यह जलमन्दिर कहलाता है। मन्दिर तक पहुँचने के लिए पाषाण का पुल बना है। जलमन्दिर के सामने समवसरण मन्दिर बना हुआ है। सरोवर के तट पर एक भव्य जैन धर्मशाला है। इस क्षेत्र में पहले यहीं एक धर्मशाला और यहीं दो मन्दिर थे। दर्शन-पूजन की दृष्टि से इन दोनों मन्दिरों पर दिगम्बर एवं श्वेताम्बरों का समान अधिकार है। अब यहाँ जैन समाज ने कई धर्मशालाएँ और मन्दिरों का निर्माण कराया है।

जलमन्दिर में भगवान् महावीर के चरण चिह्न विराजमान हैं। बाईं ओर एक वेदी पर गणधर गौतमस्वामी के और दाईं ओर एक वेदी पर गणधर सुधर्मा स्वामी के चरणचिह्न हैं। मन्दिर में केवल गर्भगृह ही है। मन्दिर के निकट ही 'पावापुरी सिद्धक्षेत्र दिगम्बर जैन कार्यालय' है। यहाँ पर सात दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। दो-दो मंजिला धर्मशालाएँ हैं। जहाँ आवास की उत्तम व्यवस्था है। समीप ही पोस्ट ऑफिस है। यहाँ 'श्री महावीर दिगम्बर जैन औषधालय' भी है।

पावापुरी में कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी से कार्तिक शुक्ल एकम् तक विशाल मेला लगता है।

❑❑❑

# सिद्धक्षेत्रों का परिचय

## बिहार एवं झारखण्ड प्रान्त

### 1. गुणावा

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या – 02**

**ऐतिहासिकता** – यह पवित्र स्थल गणधर इन्द्रभूति गौतम स्वामी का निर्वाण स्थल माना जाता है।

**विशेष** – यहाँ एक सरोवर है जिसके मध्य में मन्दिर बना है। मन्दिर तक पहुँचने के लिये 60 मीटर लम्बा पुल है। यहाँ एक मनोज्ञ दिगम्बर जैन मंदिर धर्मशाला व मानस्तम्भ है। बगल से ही एक सड़क पश्चिम की ओर जाती है, जहाँ एक जल मंदिर है, जिसमें मूल रूप से विराजमान गौतम स्वामी के चरण एवं भगवान् महावीर की प्रतिमा स्थापित है।

## 2. कमलदह

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** – 1+1 ( चरण पादुका श्री कमलदहजी निर्वाण स्थली )

**ऐतिहासिकता** – भागलपुर स्थित चम्पानगर में जन्में महामुनि सुदर्शन ( सेठ सुदर्शन ) का तपस्या करते हुए कमलदहजी में निर्वाण हुआ।

**विशेष** – प्रत्येक वर्ष पौष शुक्ल पंचमी को महामुनि सुदर्शन स्वामी का निर्वाणोत्सव मनाया जाता है। यहाँ पर मन्दिरजी में भगवान् नेमिनाथ जी की मूलनायक प्रतिमा है।

## 3. सिद्धक्षेत्र मन्दारगिरि

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** - 06

( पर्वत पर 4 एवं तलहटी में 2 )

**ऐतिहासिकता** - बारहवें तीर्थंकर वासुपूज्य स्वामी के तप, ज्ञान एवं निर्वाण कल्याणक यहाँ हुए हैं। हिन्दू मान्यता के अनुसार समुद्र मंथन के समय इसी पर्वत को मथानी बनाया गया था।

**विशेष** - आषाढ़ कृष्णा छठ को स्थापना दिवस एवं भादों सुदी चौदस को निर्वाण महोत्सव मनाया जाता है। मनोहर उद्यान में मानस्तम्भ एवं चौबीस टोंक निर्माणाधीन हैं।

## 4. सिद्धक्षेत्र/कल्याणक क्षेत्र राजगृही

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** – 12 ( पर्वत पर 10 एवं तलहटी में 2 )

**ऐतिहासिकता** – यहाँ भगवान् मुनिसुव्रतनाथ जी के गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञान कल्याणक हुए हैं, अतः कल्याणक क्षेत्र है। यह भगवान् महावीर स्वामी की प्रथम देशना स्थली है। यहाँ स्थित विपुलाचल, रत्नगिरि, उदयगिरि, अरुणगिरि ( स्वर्णगिरि ) व वैभारगिरि आदि पाँच पहाड़ियों से अनेक मुनियों ने निर्वाण प्राप्त किया इसलिए इसे सिद्धक्षेत्र माना गया है।

**विशेष** – राजगृही जैनधर्म के अतिरिक्त हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई एवं बौद्धधर्म का संगम स्थल है। प्रकृति प्रदत्त गर्म जल के झरने यहाँ का विशेष आकर्षण हैं। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।

## 5. कल्याणक क्षेत्र कोल्हुआ पहाड़

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** - 02 ( एक मंदिर धर्मशाला में एवं एक पहाड़ पर है )

**ऐतिहासिकता** - विश्वास किया जाता है कि निर्वाणकाण्ड में वर्णित कोटिशिला क्षेत्र यही है। कोल्हुआ पहाड़ से 8-10 कि. मी. पर मोदल गाँव प्राचीन भद्रिकापुरी है। यहाँ भगवान् शीतलनाथ के गर्भ व जन्म कल्याणक हुए हैं, ऐसा माना जाता है, किन्तु अनेक विद्वान् विदिशा ( म.प्र. ) की निकटस्थ पहाड़ी उदयगिरि के लिए भगवान शीतलनाथ की कल्याणक भूमि मानते हैं।

**विशेष** - यह पारसगिरि तीर्थक्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है।

# गुजरात प्रान्त

## 1. सिद्धक्षेत्र पावागढ़

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** – 13

( पहाड़ पर 10, तलहटी में 3 )

**ऐतिहासिकता** – यह एक ऐतिहासिक स्थल है। पहाड़ पर पुरातन किला एवं कई महलों के खण्डहर हैं। तलहटी का भाग चांपानेर गाँव के नाम से पहचाना जाता है। यहाँ से अनंग लवण ( लव ) तथा मदनांकुश ( कुश ) ने निर्वाण प्राप्त किया था तथा लाट देश के पाँच करोड़ नरेशों ने भी यहीं से मुक्ति प्राप्त की थी। यहाँ के जैन राजाओं ने कभी यहाँ 52 जिनालय बनवाये थे।

**विशेष** – मांची से पहाड़ पर जाने के लिये रोप वे ( उड़न खटोला ) की सशुल्क व्यवस्था है। जिसकी दूरी 3 कि.मी. है। मांची जाने हेतु मन्दिर से बस सुविधा उपलब्ध रहती है। दूरी 5 कि.मी. पहाड़ी पर एक वैष्णव मन्दिर है।

**वार्षिक मेला** – माघ सुदी 12, 13, 14 को आयोजित होता है।

## 2. सिद्धक्षेत्र शत्रुंजय ( पालीताना )

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** – 02

**ऐतिहासिकता** – अति प्राचीन महत्त्वपूर्ण तीर्थ है। यहाँ से युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन तथा द्रविड़ राजा आदि आठ करोड़ मुनि मोक्ष गए हैं। भट्टारक ज्ञानसागरजी ने अपने वर्णन में लिखा है कि वृषभदेव भगवान् यहाँ पर 22 बार पधारे। शहर के मध्य मांडवी चौक के दिगम्बर जैन मन्दिर में सभा मण्डप अत्यन्त सुन्दर है। पालीताना के महाराजा ने पर्वत पर दिगम्बर जैन मन्दिर बनाने हेतु भूमि दी। पर्वत की चढ़ाई लगभग 4 कि. मी. है। पत्थर की सड़क निर्मित है एवं 2500 सीढ़ियाँ हैं। सैंकड़ों श्वेताम्बर मंदिर, मंदरियों के बीच में पर्वत पर एक दिगम्बर जैन मंदिर बना हुआ है।

# 3. सिद्धक्षेत्र तारंगा

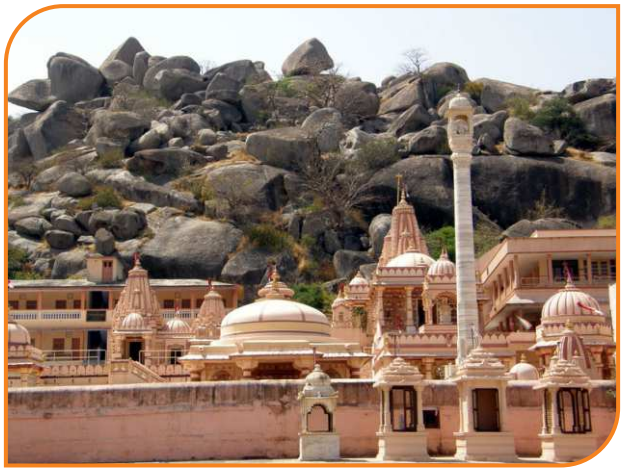

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** – 18 **क्षेत्र पर पहाड़** – है

**ऐतिहासिकता** – कोटिशिला, सिद्धशिला सहित 18 मन्दिर हैं। यहाँ से दत्त, वरदत्त, सागरदत्तादि साढ़े तीन करोड़ मुनिराज मोक्ष गए हैं। इसका प्राचीन नाम तारापुर था। तलहटी के तेरह मंदिरों में प्रमुख मंदिर भगवान् संभवनाथ एवं आदिनाथ के हैं। जो कि चालुक्य काल के प्रतीत होते हैं। क्षेत्र का वन क्षेत्र बहुत ही रमणीय है।

इस क्षेत्र पर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा 20 अप्रैल, 1996 ( वै. शु. 3 ) की शुभ तिथि में प्रवचनसागर आदि 7 क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की गईं।

**विशेष** – प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है। यहाँ संत निवास में 10 कमरे तथा 350 व्यक्तियों का प्रवचन हाल है।

## 4. सिद्धक्षेत्र गिरनार

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** – 05 ( 1 जूनागढ़ में, 3 तलहटी में एवं 1 पहाड़ पर हैं। )

**ऐतिहासिकता** – गिरनार पहाड़ पर भगवान् नेमिनाथ के दीक्षा, ज्ञान एवं मोक्ष कल्याणाक हुए हैं। यहीं पर श्रीधरसेनाचार्य ने अपने शिष्यों पुष्पदन्त-भूतबलि को पढ़ाया, जिन्होंने षट्खण्डागम ग्रन्थ की रचना की। यहाँ से 72 करोड़ 700 मुनिराजों का मोक्ष प्राप्त हुआ था। सम्मेदशिखर के बाद यह तीर्थ महत्त्वपूर्ण है। पर्वत पर 5 टोंक हैं तथा कुल 9999 सीढ़ियाँ हैं। तलहटी में दिगम्बर जैन मन्दिर एवं धर्मशाला है। इस क्षेत्र में आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा 19 दिसम्बर, 1996 को प्रवचनसागरजी आदि 5 एलक दीक्षाएँ भगवान नेमिनाथ स्वामी की निर्वाण स्थली टोंक पर प्रदान की गईं।

**विशेष** – जूनागढ़ में जगमाल चौक पर दिग. जैन मंदिर एवं धर्मशाला है, ऊपर कोट किला, राजुल महल एवं दरबार देखने योग्य हैं।

## मध्यप्रदेश

## 1. सिद्धक्षेत्र/अतिशय क्षेत्र कुण्डलपुर( कुण्डलगिरी )

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** – 63

**ऐतिहासिकता** – यह क्षेत्र अंतिम केवली श्रीधर स्वामी की सिद्धभूमि है। भगवान् आदिनाथ बड़ेबाबा की 15 फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा 5-6 वीं सदी की यक्षरक्षित, अतिशयकारी भव्यता लिए विराजमान है।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के 5 चातुर्मास व 7 ग्रीष्मकालीन वाचनाएँ होने से यह क्षेत्र विशेष रूप से प्रसिद्ध एवं विकसित हुआ है। महाराजा छत्रसाल ने अपना खोया राज्य पुन: वापस पाने पर वर्धमानसागर तालाब में एक पक्का घाट जीर्णोद्धार कर, पीतल का दो मन का घण्टा वा छत्र आदि अन्य वस्तुएँ मंदिरजी को भेंट दी थीं। कहते हैं यहाँ भगवान् महावीर का समवसरण भी

आया था। जनश्रुति के अनुसार मोहम्मद गजनवी ने जब प्रतिमा पर छैनी लगाई तब प्रतिमा से दूध की धारा व मधुमक्खियाँ प्रकट हुईं, जिससे डरकर उसे वहाँ से भागना पड़ा था।

फरवरी सन् 2001 में बड़ेबाबा का महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम समवसरण पञ्चकल्याणक गजरथ सहित सम्पन्न हुआ एवं अद्वितीय वास्तुशिल्प से नव-निर्माणाधीन मंदिर की मुख्य वेदिका पर 17 जनवरी, 2006 में बड़ेबाबा की अतिमनोज्ञ प्रतिमा छोटेबाबा ( आचार्य श्री विद्यासागरजी ) ससंघ के सान्निध्य में विराजमान हुई। इसी अवसर पर 58 आर्यिका दीक्षाएँ भी सम्पन्न हुईं। प्रतिवर्ष महावीर भगवान् के निर्वाण दिवस पर यहाँ लाडू चढ़ाने का कार्यक्रम स्थानीय एवं दूरदराज से पधारे हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में सम्पन्न होता है। यात्रियों के लिए आवास एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था है। प्रवचन सभा भवन के रूप में 'आचार्य विद्यासागर भवन' एवं मुनिजनों के आवास हेतु 'ज्ञान साधना केन्द्र' स्वाध्याय-साधना एवं प्रवचन प्रभावना के लिए विशेष स्थान हैं।

इस क्षेत्र पर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा 7 अगस्त, 1989 ( श्रा. शु. 6 ) की शुभ तिथि में प्रशान्तमति आदि 8 आर्यिका दीक्षा, 4 जुलाई, 1992 ( आ. शु. 5 ) की शुभ तिथि में आदर्शमति आदि 15 आर्यिका दीक्षा एवं 13 फरवरी, 2006 ( मा. शु. पूर्णिमा ) की शुभ तिथि में स्वास्थ्यमति आदि 58 आर्यिका दीक्षा प्रदान की गईं। जिसमें मेरी छोटी बहिन सुनीताजी की दीक्षा आर्यिका स्वभावमतिजी के रूप में सम्पन्न हुई। इस क्षेत्र पर क्षुल्लक, ऐलक दीक्षाएँ भी प्रदान की गईं।

वार्षिक मेला - माघसुदी 11 से पूर्णिमा तक

## 2. सिद्धक्षेत्र अहार

क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या - 08

( मानस्तम्भ 2, चरणछतरी - 6 ) ( पंचपहाड़ी पर )

ऐतिहासिकता - इस क्षेत्र से भगवान् मल्लिनाथ के तीर्थकाल में सत्रहवें कामदेव मदनकुमार ( नलराजा ) एवं महावीर स्वामी के तीर्थकाल में आठवें केवली विस्कंवल ने तपस्या कर मोक्ष प्राप्त किया। जनश्रुति है कि 12 वीं शताब्दी में चंदेरी निवासी पाडाशाह व्यापारी ने जिनदर्शन उपरान्त भोजन करने का व्रत ले रखा था। एक बार उन्हें रांगा भरी गाड़ियों सहित यहाँ रुकना पड़ा लेकिन यहाँ जिनालय न होने से वे भोजन ग्रहण नहीं कर सकते थे। तभी उन्हें वहाँ मुनिराज के दर्शन हुए, उन्हें आहार दान देकर स्वयं भोजन किया। संयोग से उनकी रांगा चाँदी में परिवर्तित हो गई, उस द्रव्य राशि से मन्दिर बनवाया व क्षेत्र का नाम 'अहार' रखा। मूलनायक प्रतिमा शान्तिनाथ भगवान् की लगभग 5 मीटर ऊँची है। आजू-बाजू में कुन्थुनाथ एवं अरनाथ भगवान् की खड्गासन प्रतिमायें हैं। दीवार की वेदियों में त्रिकाल चौबीसी तथा विदेहक्षेत्र स्थित विद्यमान 20 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान हैं। मुख्य मंदिर की ये त्रिमूर्तियाँ 11-12 वीं शताब्दी की हैं। सन् 1985 में आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ का चातुर्मास प्रभावनापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस क्षेत्र पर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा 8 नवम्बर, 1985 ( का. कृ. 10 ) की शुभ तिथि में प्रमाणसागरजी आदि 9 क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की गईं।

प्रतिवर्ष अगहन सुदी 13 से 15 तक वार्षिक मेला लगता है।

## 3. सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि

**मंदिरों की संख्या** – 41 ( पर्वतराज पर 31 मन्दिर, गुफायें 3, चरण पादुकाएँ 5, तलहटी में 3 मन्दिर )

**ऐतिहासिकता** – इस क्षेत्र से गुरुदत्त आदि मुनियों ने निर्वाण प्राप्त किया है। पर्वत पर जाने के लिए 170 सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। पर्वत पर 31 जिनालय व तीन गुफाएँ हैं। पर्वत के पास दो कुण्ड हैं, जिनका जल सर्दियों में गर्म तथा गर्मियों में ठण्डा रहता है। इस क्षेत्र के दोनों ओर चदांक्षीव एवं श्यामरी नामक दो नदियाँ बहती हैं। ग्राम में मूलनायक भगवान् आदिनाथ की सं.1549 की प्रतिष्ठित प्रतिमा है। गुरुदत्त निर्वाण गुफा, काँच मंदिर, चौबीस मन्दिर, मानस्तम्भ ( अतिप्राचीन ) एवं संग्रहालय दर्शनीय है।

इस क्षेत्र पर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा 8 मार्च, 1980 ( चै. कृ. 6 ) की शुभ तिथि में मुनि श्री समयसागरजी के रूप में प्रथम मुनि दीक्षा प्रदान की गई।

**विशेष** – यहाँ दिगम्बर जैन तीर्थ प्रबन्धन प्रशिक्षण संस्थान संचालित है। माघ शुक्ल त्रयोदशी से पूर्णिमा तक रथ यात्रा एवं कार्तिक कृष्ण अमावस्या को श्री महावीर स्वामी भगवान् का निर्वाण महोत्सव मनाया जाता है।

## 4. सिद्धक्षेत्र नैनागिरि ( रेशंदीगिरि )

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या - 53, क्षेत्र पर पहाड़ - है**

**ऐतिहासिकता** - लगभग 2900 वर्ष पूर्व भगवान् पार्श्वनाथ का समवसरण यहाँ आया था, साथ ही दत्त, इन्द्रदत्त, वरदत्त, गुणदत्त और सायरदत्त पंच ऋषिराजों ने यहाँ से मोक्ष प्राप्त किया। खुदाई करने पर 13 जिन प्रतिमाओं से युक्त मन्दिर प्राप्त हुए थे। सर्वाधिक प्राचीन जिनालय 1109 एवं सन् 1042 का है। सन् 1955-56 में भगवान् पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा एवं चौबीसी जिनालय की पंच कल्याणक प्रतिष्ठा हुई। सन् 1987 में आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में भगवान् पार्श्वनाथ समवसरण जिनालय की पञ्च-कल्याणक प्रतिष्ठा गजरथ महोत्सव पूर्वक सम्पन्न हुई। यहाँ आचार्य श्री के 3 चातुर्मास एवं अनेक शीतकालीन वाचनायें हुईं। यहाँ 38 मन्दिर पहाड़ी पर, 13 मन्दिर तलहटी में, 2 मन्दिर पारस सरोवर में स्थित हैं। ऐसा कहते हैं कि मंदिर नंबर 35 में विराजमान महावीर स्वामी के अभिषेक एवं प्रक्षाल के समय ओंकार ध्वनि सुनाई देती है। इस क्षेत्र पर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा 10 जनवरी, 1980 ( मा. कृ. 8 ) क्षमासागरजी आदि 5 क्षुल्लक एवं 1 ऐलक दीक्षा प्रदान की गई तथा 2 अगस्त 1982 ( भा. शु. 2 ) की शुभ तिथि में मुनि क्षमासागरजी आदि 3 मुनि दीक्षाएँ प्रदान की गईं। 10 फरवरी, 1987 ( मा. शु. 12 ) की शुभ तिथि में आर्यिका गुरुमति आदि 11 आर्यिका एवं 12 क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की गईं।

**विशेष आयोजन** - अगहन शुक्ल तेरस से पूर्णिमा तक वार्षिक मेला लगता है।

## 5. सिद्धक्षेत्र नेमावर ( सिद्धोदय )

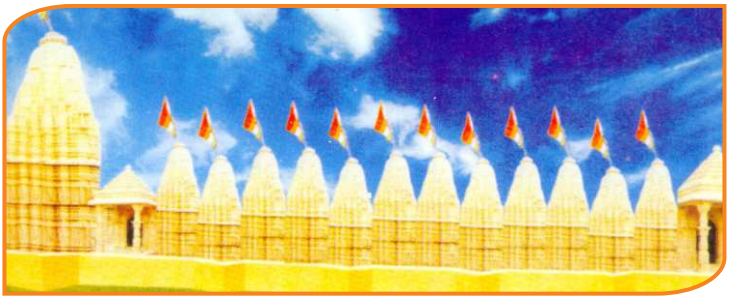

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** - 2, त्रिकाल चौबीसी तथा पंच बालयति मन्दिर निर्माणाधीन।

**ऐतिहासिकता** - रावण के पुत्र सहित साढ़े पाँच करोड़ मुनिराज इस स्थल से मोक्ष पधारे हैं। ऐसा जानकर इस नवीन तीर्थ का निर्माण नर्मदा नदी के किनारे किया गया है। नेमावर ग्राम में एक प्राचीन मंदिर भी है। आचार्य श्री के आशीर्वाद से यहाँ लालपत्थर से विशाल पंच बालयति मन्दिर एवं त्रिकाल चौबीसी जिनालयों का निर्माण कार्य चल रहा है। इनमें अष्टधातु की खड्गासन भूत, वर्तमान, भविष्य चौबीसी एवं पंच बालयति की प्रतिमाएँ विराजमान होना है। यहाँ गौशाला भी है। यहाँ आचार्य श्री के 3 चातुर्मास एवं ग्रीष्म तथा शीतकालीन वाचनायें भी हुईं।

इस क्षेत्र पर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा 16 अक्टूबर, 1997 में अपूर्वसागर आदि 10 मुनि दीक्षाएँ, 22 अप्रैल, 1999 में ऋषभसागर आदि 23 मुनि दीक्षाएँ, 6जून,1997 में सूत्रमति आदि 29 आर्यिका दीक्षाएँ सम्पन्न हुई। 18 अगस्त, 1997 को उपशान्त मति आदि 14 आर्यिका दीक्षाएँ प्रदान की गईं।

## 6. सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** – 13

**ऐतिहासिकता** – नर्मदा और कावेरी नदियों का संगमस्थल सिद्धवरकूट एक सिद्धक्षेत्र है। यहाँ से 2 चक्रवर्ती, 10 कामदेव व साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष को प्राप्त हुए हैं। भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी ने सं.1935 में स्वप्न पाकर खोज की तो उन्हें चन्द्रप्रभ भगवान् की मूर्ति एवं सं.1545 की आदिनाथ भगवान् की मूर्ति प्राप्त हुई एवं विशाल मन्दिर दृष्टिगोचर हुआ। जीर्णोद्धार पश्चात् सं. 1951 में प्रतिष्ठा द्वारा यह क्षेत्र प्रकाश में आया। मान्धाता में भी धर्मशाला है। यहाँ फाल्गुन सुदी 15 व एकम, चैत्र वदी 1 को एवं होली पर मेला लगता है। तीन दिवसीय भव्य आयोजन में बाहुबलीस्वामी का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न होता है।

इस क्षेत्र पर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा 1 अप्रैल, 1997 में 1 क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की गई।

**दर्शनीय** – ओंकारेश्वर जल विद्युत परियोजना ( बाँध ), नर्मदा नदी का सुहावना दृश्य 1 कि.मी. एवं पर्यटन स्थल 2 कि.मी.।

## 7. सिद्धक्षेत्र ऊन ( पावागिरि )

क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या - 09

क्षेत्र पर पहाड़ - पहाड़ी/टेकरी है

ऐतिहासिकता - ऊन स्वर्णभद्र मुनि की मोक्षस्थली है। जनश्रुति है कि राजा बल्लाल ने बाल्यकाल में भूलवश नागिन निगल ली थी जो समय के साथ कष्ट देने लगी। अतः कष्ट निवारण हेतु प्राण विसर्जित करने काशी गंगा चल दिये। रास्ते में रात में रानी ने नाग-नागिनी की बातें सुनकर राजा को जानकारी दी, उससे कष्ट निवारण हो गया व दौलत भी प्राप्त हुई। राजा ने 100 तालाब, मंदिर एवं बावड़ी बनाने का संकल्प लिया लेकिन दुर्भाग्यवश तीनों चीजें 99-99 ही बनवा सका, अतः क्षेत्र का नाम 'ऊन' ( न्यून/कमी वाला ) पड़ गया। नगर में 11-12 वीं शताब्दी के मन्दिर व मूर्तियाँ हैं। यह अतिशय क्षेत्र भी है।

## 8. सिद्धक्षेत्र सोनागिरि

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या - 108**

**ऐतिहासिकता - यह एक सिद्धक्षेत्र है। यहाँ से नंग, अनंगकुमार सहित साढ़े पाँच कोटि मुनि चतुर्थकाल में मोक्ष पधारे थे। 8 वें तीर्थंकर भगवान् चन्द्रप्रभजी का समवसरण भी कई बार यहाँ आया है। यहाँ उनकी सातिशय प्रतिमाएँ विराजमान हैं। मन्दिर क्र. 57 में मूलनायक प्रतिमा चन्द्रप्रभ की 3 मीटर ऊँची, खड्गासन अतिशययुक्त विराजमान है। पहाड़ पर नारियल कुण्ड व बाजणी शिला आकर्षण का केन्द्र है। पहाड़ प्रदक्षिणा का घेरा 3 कि.मी. है। प्रतिवर्ष होली पर चैत्रवदी एकम से पंचमी तक मेला लगता है। श्री नंदीश्वर द्वीप की भव्य रचना दर्शनीय है। इस क्षेत्र पर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा 18 दिसम्बर,1975 ( मगशिर शु. पूर्णिमा ) की शुभ तिथि में समयसागरजी, योगसागरजी आदि 4 क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की गईं तथा इसी क्षेत्र पर 31 मार्च,1988 ( महावीर जयंती ) की शुभ तिथि में प्रमाणसागरजी आदि 8 मुनि दीक्षाएँ प्रदान की गईं।**

## 9. सिद्धक्षेत्र गोपाचल

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** - 28

**ऐतिहासिकता** - जैन इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला का प्रधान केन्द्र रहा है। गोपाचल मूर्तिकला, उसकी विशालता, कला वैभव, साहित्य एवं इतिहास के कारण संगम तीर्थ है।

इस क्षेत्र से सुप्रतिष्ठित केवली का मोक्ष होने के कारण यह निर्वाण भूमि भी है। यही कारण है कि आचार्य पूज्यपाद की निर्वाण भक्ति के पश्चात् अनेक तीर्थ वंदनाओं में गोपाचल तीर्थक्षेत्र का वर्णन है। भगवान् पार्श्वनाथ की विशालतम 42 फुट की पद्मासन प्रतिमा विश्व में अद्वितीय है। यहाँ पर छोटी-बड़ी 1500 प्रतिमाएँ हैं।

गोपाचल सदैव से ही तीर्थ रहा है, क्योंकि यहाँ तीर्थंकरों का आगमन हुआ है। राजर्षि चन्द्रगुप्त मौर्य एवं उनके गुरु श्रुतकेवली भद्रबाहु यहाँ पधारे थे। अपभ्रंश भाषा के महाकवि रइधू ने गोपाचल को पण्डितों का गुरु एवं गोपाचल दुर्ग को स्वर्ग गुरु कहा है। यहाँ पर अनेक कवि एवं विद्वानों ने अनेक ग्रन्थों की रचनायें की हैं। यहाँ पर कुल 26 जैन गुफाएँ निर्मित हैं। एक पत्थर की बावड़ी विशेष प्रसिद्ध है। सिद्धपीठ के ऊपर की गुफा में अनेक जैन प्रतिमाएँ सुरक्षित हैं।

# 10. सिद्धक्षेत्र
# बावनगजा ( चूलगिरि )

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या – 33**

**ऐतिहासिकता** – यहाँ से इन्द्रजीत व कुम्भकर्ण आदि साढ़े पाँच करोड़ मुनि मोक्ष पधारे थे। यहाँ पहाड़ में पाषाण की विश्व प्रसिद्ध सबसे ऊँची भगवान् आदिनाथ की लगभग 27 मीटर ( 84 फीट अर्थात् 52 हाथ ) ऊँची प्रतिमा उत्कीर्ण है।( किसी काल में गज का प्रमाण 1 हाथ था ) इस तरह बावनगज होने के कारण ही इसे 'बावनगजा' क्षेत्र कहते हैं। यह मूर्ति 13 वीं शताब्दी से भी पहले बनी है। पर्वत के पास में ही मंदोदरी का प्रासाद बना है। प्रत्येक बारह वर्ष में महामस्तकाभिषेक व मेला आयोजित होता है। आचार्य श्री विद्यानन्दजी महाराज के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में प्रतिमा का जीर्णोद्धार एवं लेप हुआ एवं 14 से 21 जनवरी, 1991 में पञ्च कल्याणक कार्यक्रम प्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुआ ।

**वार्षिक मेला** – प्रतिवर्ष पौष सुदी 8 से 15 तक वार्षिक मेला लगता है एवं भगवान् आदिनाथजी के निर्वाणोत्सव पर माघ वदी चौदस को भी मेला लगता है।

## 11. सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि ( मेंढ्रगिरि )

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** – 54

( पहाड़ी पर 52 , तलहटी में 2 ) 250 सीढ़ियाँ हैं।

**ऐतिहासिकता** – इस क्षेत्र से साढ़े तीन करोड़ मुनि निर्वाण को प्राप्त हुए हैं। पार्श्वनाथजी का पहला मन्दिर शिल्प कला का सुन्दर उदाहरण है, प्रतिमा सप्तफण मण्डित एवं प्राचीन है। जनश्रुति के अनुसार यहाँ पर हर अष्टमी, चौदस एवं पूर्णिमा को केसर-चंदन की वर्षा होती है। अधिकांश मन्दिर 16 वीं शताब्दी अथवा उसके बाद के बने हुए हैं। मन्दिर क्रमांक 10 मेंढ्रगिरि के नाम से प्रसिद्ध है, जो पहाड़ी के गर्भ में खुदा हुआ अति प्राचीन मन्दिर है। इसकी नक्काशी, स्तम्भों व छत की अपूर्व रचना दर्शनीय है। भगवान् शान्तिनाथ की प्रतिमा अति मनोज्ञ है। यहाँ एक रमणीय जलप्रपात है। गोमुखकुण्ड से सतत् जलधारा बहते रहने पर भी आज तक उस पहाड़ी भाग से जल के स्त्रोत का पता नहीं लग पाया। कार्तिक पूर्णिमा को मेला व रथयात्रा का आयोजन होता है। यात्रियों के लिए विशाल धर्मशाला है। धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए 'आचार्य विद्यासागर भवन' का निर्माण किया गया है। आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के तीन चातुर्मास सम्पन्न हुए एवं इस क्षेत्र पर आचार्य श्री द्वारा 11 फरवरी, 1998 ( मा. शु. 15 ) की शुभ तिथि में अभयसागरजी आदि 9 मुनि दीक्षाएँ प्रदान की गईं तथा इसी क्षेत्र पर 16 मई , 1991 ( वै. शु. 3 ) की शुभ तिथि में सिद्धान्तसागर आदि 7 क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की गईं।

**विशेष** – यहाँ पर भगवान् शीतलनाथ जी का समवसरण आया था। मोतियों की वर्षा होने से 'मुक्तागिरि' नाम पड़ा।

## महाराष्ट्र प्रान्त

### 1. सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि

क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या - 11

ऐतिहासिकता - यह क्षेत्र कुलभूषण एवं देशभूषण मुनिवरों की मोक्ष स्थली है। यहाँ पर शान्तिनाथ मन्दिर के निकट चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागरजी महाराज की समाधि सन् 1955 में हुई थी। उस समाधि स्थल पर चरण चिह्न निर्मित हैं। यहाँ छोटा पहाड़ है। पहाड़ पर एवं नीचे भी मंदिर हैं। पहाड़ी पर 7 एवं तलहटी में 4 मन्दिर हैं। पहाड़ी पर 1. कुलभूषण-देशभूषण का मन्दिर, 2. शान्तिनाथ मन्दिर, 3. बाहुबली मन्दिर, 4. आदिनाथ मन्दिर, 5. अजितनाथ मन्दिर, 6. चैत्य, 7. नंदीश्वर जिनालय। तलहटी में - 1. नेमिनाथजी 2. महावीर स्वामी, 3. रत्नत्रय, 4. समवसरण मंदिर है। यहाँ गुरुकुल भी है।

वार्षिक मेला - मार्गशीर्ष पूर्णिमा एवं आचार्य शांतिसागर पुण्य तिथि भाद्र शु.दोज।

ऐतिहासिक एवं दर्शनीय - उस्मानाबाद गुफाएँ 60 कि.मी.।

## 2. सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या – 15**

**ऐतिहासिकता** – यह क्षेत्र दक्षिण भारत का सम्मेदशिखर कहलाता है। यहाँ से श्रीराम, हनुमान, सुग्रीव, सुडील, गव, गवाक्ष, नील, महानील सहित 99 करोड़ मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुये हैं। आर्यिका सीताजी यहीं से समाधिमरण कर 16 वें स्वर्ग में प्रतीन्द्र हुईं। श्रीकृष्णजी की मृत्यु एवं अग्नि संस्कार भी यहीं हुआ। आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से पहाड़ पर भगवान् वृषभदेव की विशालतम 108 फीट ऊँची मूर्ति का निर्माण हो रहा है। मांगीजी पर 7 गुफाएँ व तुंगीजी पर 4 गुफाएँ हैं। तलहटी में 3 मन्दिर हैं। आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने सन् 1997 में ससंघ इस क्षेत्र की वंदना की तथा बड़ी धर्म प्रभावना हुई।

**वार्षिक मेला** – कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा।

## 3. सिद्धक्षेत्र गजपंथा

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** – 06

( तलहटी में 1 , पहाड़ पर 3 गुफा एवं 2 मन्दिर। )

**ऐतिहासिकता** – इस क्षेत्र से सात बलभद्र और आठ करोड़ मुनि मोक्ष को प्राप्त हुए हैं। धर्मशाला स्थित जिनालय में मूलनायक प्रतिमा भगवान् महावीर स्वामी की है। पर्वत की ऊँचाई 400 फीट है। पर्वत की तलहटी में सुन्दर वाटिका व जिनालय है। पर्वत पर 3 गुफायें व मन्दिर हैं तथा 2 नवनिर्मित जिनालय हैं। यहाँ गुफाओं को लेणी कहते हैं। पार्श्वनाथ गुफा दर्शनीय है। वर्ष 1973 में 24 सितम्बर के दिन मुनि श्रीसुधर्मसागरजी महाराज की सल्लेखना सम्पन्न हुई। उस अवधि में अनेक चमत्कारिक घटनाएँ हुई हैं।

**वार्षिक मेला**– प्रतिवर्ष माघ शुक्ल 14 को मेला लगता है।

# उत्तरांचल एवं उत्तरप्रदेश

## 1. सिद्धक्षेत्र अष्टापद-कैलास ( बद्रीनाथ )

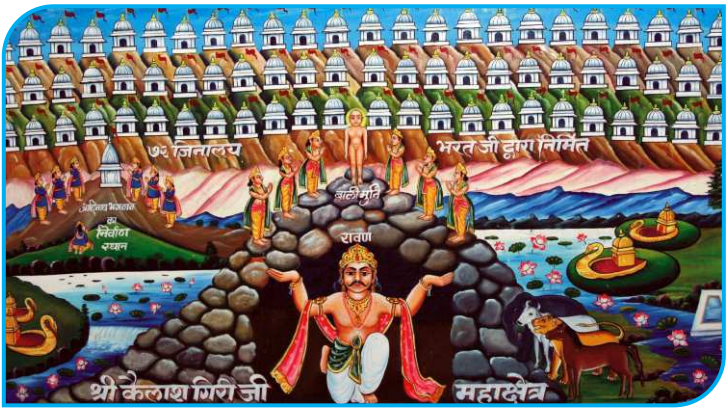


क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या - 01

क्षेत्र पर पहाड़ - है

ऐतिहासिकता - यह भगवान् ऋषभदेव की साधना स्थली है। उन्होंने कैलास पर्वत पर योगनिरोध किया तथा यहीं से मोक्ष प्राप्त किया था। बद्रीनाथ में स्थापित भगवान् ऋषभदेव के चरण अत्यन्त प्राचीन हैं, ऐसा प्राप्त प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है। भारतीय सीमा का अंतिम गाँव 'माना' 3 कि. मी.पर है। कैलास पर्वत इससे आगे है। निर्वाणभूमि के प्रतीक स्वरूप इस तीर्थ पर 24 चरण चिह्न की स्थापना की गई है।

विशेष - मन्दिर एवं धर्मशाला अक्षय तृतीया से शरद पूर्णिमा तक खुली रहती है। शेष अवधि में हिमपात के कारण क्षेत्र का मार्ग एवं मन्दिर बन्द रहता है।

## 2. सिद्धक्षेत्र मथुरा चौरासी

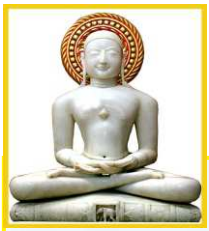

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या – 01**

**ऐतिहासिकता** – अंतिम केवली जम्बूस्वामी की यह निर्वाण स्थली है। यहाँ पर श्री जम्बूस्वामी की 18 फुट ऊँची, 65 टन वजनी पद्मासन ग्रेनाइट की प्रतिमा उद्यान में विराजमान की गई है। उद्यान में चारों ओर 6 एकड़ भूमि पर फलदार वृक्षों का बगीचा है। यहाँ मूलनायक अजितनाथ भगवान् की मनोहारी प्रतिमा है, जो भक्तों के मन को मोह लेती है।

## 3. सिद्धक्षेत्र पावागिरि

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** - 08

**क्षेत्र पर पहाड़** - है।

**ऐतिहासिकता** - यहाँ पर 13-14 वीं शताब्दी की मनोज्ञ मूर्तियाँ एवं तीन नवीन जिनालय हैं, विद्वानों के मतानुसार स्वर्णभद्र आदि मुनि यहाँ से मोक्ष को प्राप्त हुए। क्षेत्र के पीछे पहाड़ी पर ही स्वर्णभद्र आदि चार मुनियों की चरण छतरियाँ हैं।

## 4. सिद्ध/कल्याणक क्षेत्र शौरीपुर बटेश्वर

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** - 03

**ऐतिहासिकता** - सहस्रों वर्ष पूर्व धन-धान्य से समृद्ध यमुनातट पर शौरीपुर एक विशाल नगरी थी। इस नगरी को महाराज शूरसेन ने बसाया था। उन्हीं की पीढ़ी में महाराज समुद्रविजय हुए जो 10 भ्राता थे। इनमें समुद्रविजय सबसे बड़े तथा सबसे छोटे वसुदेव थे, जिनके पुत्र श्री कृष्ण थे। कुन्ती और माद्री महाराज समुद्रविजय की बहिनें थीं, जो कुरुवंशी पाण्डु को ब्याही गई थीं। समुद्रविजय के पुत्र तीर्थंकर नेमिनाथजी थे, जो श्रीकृष्ण से उम्र में बहुत छोटे थे।

श्री सुप्रतिष्ठ मुनि को यहाँ केवलज्ञान प्राप्त हुआ। मुनि श्री यम, मुनि श्री धन्य एवं मुनि श्री निर्मलसुत की निर्वाण भूमि है। श्री नेमिप्रभु के पश्चात् अनेक दिगम्बर मुनियों की केवल ज्ञानोत्पत्ति के कारण यह भूमि सिद्धभूमि के गौरव से अलंकृत हुई। श्रीनेमिनाथ भगवान् की यह गर्भ और जन्म कल्याणक भूमि है। यह सिद्धक्षेत्र और कल्याणक क्षेत्र दोनों ही है। क्षेत्र के भूगर्भ से प्राचीन मूर्तियाँ, महाभारतकालीन ईंटें तथा पुरातात्त्विक सामग्री प्राप्त हुई हैं।

**वार्षिक मेला** - प्राचीन मेला कार्तिक शुक्ल 14 से मार्गशीर्ष कृष्ण एकम तक। दूसरा मेला श्री अजितनाथ निर्वाण महोत्सव चैत्र शुक्ल पंचमी को होता है।

# उड़ीसा प्रान्त

## सिद्धक्षेत्र खण्डगिरि - उदयगिरि

**क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या** - 28 ( उदयगिरि पर 18 गुफाएँ, खण्डगिरि पर 4 मन्दिर एवं 5 गुफाएँ तथा धर्मशाला में 1 जिनालय। )

**ऐतिहासिकता** - उदयगिरि पहाड़ी 35 मीटर ऊँची है। जिसमें 18 गुफाएँ भव्य एवं दर्शनीय हैं तथा 2500 वर्ष पुराना 84 फुट के विस्तार में उत्कीर्ण एक शिलालेख है। खण्डगिरि पहाड़ी लगभग 40 मीटर ऊँची है। यहाँ 4 जिनालय एवं 5 गुफाएँ हैं। अनंत गुफा में डेढ़ हाथ की कायोत्सर्ग जिनप्रतिमा है। इन्द्रकेसरी गुफा में 8 प्रतिमाएँ अंकित हैं। आदिनाथ गुफा में 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ हैं। यहाँ भगवान् महावीर का समवसरण आया था, अतः यह अतिशय क्षेत्र भी माना जाता है। यहाँ से दशरथ राजा के 500 पुत्र मोक्ष गए थे, अतः यह सिद्धक्षेत्र भी है। अनेक विद्वान् इसे कोटिशिला भी मानते हैं। सन् 1984 में आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ का इस क्षेत्र पर धर्मप्रभावना पूर्वक आगमन हुआ।

## निर्वाण कल्याणक ( मुक्ति प्राप्ति ) शास्त्रीय संदर्भों में -

सर्व कर्मों से छुटकारा पाने का नाम मोक्ष है। भाव कर्म के रूप में राग-द्वेष और द्रव्य कर्म के रूप में ज्ञानावरणादि अष्टकर्म प्रत्येक संसारी आत्मा में लगे हुए हैं। इन अष्ट कर्मों से छुटकारा पाने वाली आत्मा ही मोक्ष प्राप्त करती है। केवलज्ञान प्राप्ति से तेरहवें गुणस्थान में स्थित तीर्थंकर भगवान् का धर्मतीर्थ प्रवर्तन करते हुए आयु का जब थोड़ा समय शेष रहता है तब वह समवसरण छोड़कर योग-निरोध करने के लिए चले जाते हैं। पद्मासन या खड्गासन में स्थित वे केवली भगवान् सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति नामक तीसरे शुक्ल-ध्यान से मन, वचन, काय रूप योग का निरोधकर जब चौदहवें गुणस्थान में स्थित होते हैं, तब वहाँ व्युपरतक्रियानिवृत्ति नामक चौथे शुक्लध्यान से अघातिया कर्मों की 72 और 13 प्रकृतियों का नाश कर अन्त समय में अ-इ-उ-ऋ-लृ इन पाँच लघु अक्षरों के उच्चारण में जितना समय लगता है, उतने समय में मोक्ष चले जाते हैं। औदारिक, तैजस और कार्मण इन तीन शरीरों के नाश से सिद्धत्व पर्याय प्राप्त कर वे भगवान् सम्यक्त्वादि आठ गुणों से युक्त हो क्षण भर में ही तनुवातवलय में जा पहुँचते हैं तथा वहाँ पर नित्य, निरंजन, अपने अंतिम शरीर से कुछ न्यून, अमूर्त, आत्म-सुख में तल्लीन, सदा लोकालोक के ज्ञाता-दृष्टा बने रहते हैं। दूध में से निकला हुआ घी जैसे पुनः लौटकर दूध नहीं बनता उसी प्रकार शुद्धता/सिद्धता को प्राप्त आत्माएँ फिर कभी लौटकर संसार में नहीं आतीं। भगवान् को मोक्ष होते ही देवराज इन्द्र का आसन कम्पायमान हो जाता है। इन्द्रादि देव बड़े हर्ष के साथ भगवान् के अन्तिम शरीर से सम्बन्ध रखने वाली निर्वाण कल्याणक की पूजा के लिए आते हैं।

भगवान् के निर्वाण क्षेत्र की पहचान अक्षुण्ण बनी रहे, इस अभिप्राय से निर्वाणस्थल पर सौधर्म इन्द्र सिद्धशिला का निर्माण कर वज्र से उस पर स्वस्तिक या जिनेन्द्र भगवान् के लक्षणों को चिह्नित करता है। जिस स्थान से भगवान् को मोक्ष होता है वह भूमि सिद्धभूमि/निर्वाणभूमि मानी जाती है तथा पवित्र तीर्थ के रूप में प्रसिद्धि को प्राप्त होती है। इस तरह विभिन्न स्तुतियों की महाध्वनियों एवं पूजा आदि मंगल के साथ इन्द्रादिक समस्त देवतागण भगवान् का मोक्ष कल्याणक मनाकर अपने-अपने स्थान को चले जाते हैं।

**विशेष** - जीव के मुक्त होने पर उनके शरीर के सम्बन्ध में शरीर के यथावत् बचने रूप अथवा विद्युतवत् विनशने या कपूर की तरह उड़ जाने रूप दो कथन मिलते हैं। 'आदिपुराण' ग्रन्थ में लिखा है कि - आदिनाथ भगवान् का निर्वाण कल्याणक मनाने के लिए आए हुए समस्त देवों ने ''यह भगवान् का शरीर पवित्र, उत्कृष्ट, मोक्ष का साधन, स्वच्छ और निर्मल है।'' यह विचार कर उसे बहुमूल्य पालकी में विराजमान किया। तदनन्तर अग्निकुमार नाम के भवनवासी देवों के इन्द्रों ने अपने मुकुटों से उत्पन्न एवं चन्दन, अगर, कपूर, केशरादि पदार्थों से बढ़ाई गई अग्नि से उसका वर्तमान आकार नष्ट कर दिया अर्थात् उसका अग्नि संस्कार किया। तत्पश्चात् उन इन्द्रों ने पंच कल्याणक को प्राप्त होने वाले श्री वृषभदेव के शरीर की भस्म उठाई और 'हम लोग भी ऐसे ही हों' यह विचार करते हुए भक्ति से उसे अपने ललाट पर, दोनों भुजाओं में, कण्ठ और वक्षस्थल में लगाई तथा स्तुति गुणगान करते हुए बड़ी तन्मयता से 'आनन्द' नामक नाटक किया। आचार्य पूज्यपाद कृत 'निर्वाण भक्ति' में लिखे गए 'अग्नीन्द्राज्जिन देहं' एवं प्रथमानुयोग के कुछ अन्य ग्रन्थों में भी आए

मोक्षोपरान्त निर्वाण-क्रिया के सन्दर्भ इसी कथन के अनुरूप मिलते हैं।

किन्तु 'हरिवंश पुराण' में लिखा है - ''भगवान् नेमिनाथ के मोक्ष जाने पर इन्द्रादि चतुर्णिकाय के देवों ने भगवान् के शरीर से सम्बन्ध रखने वाली निर्वाण कल्याणक की पूजा की। दिव्य गन्ध तथा दिव्य पुष्प आदि से पूजित तीर्थंकर आदि मोक्षगामी जीवों के शरीर क्षणभर में बिजली की नाईं आकाश को दैदीप्यमान करते हुए विलीन हो गए क्योंकि यह स्वभाव है कि तीर्थंकर आदि के शरीर के परमाणु अन्तिम समय बिजली के समान क्षणभर में स्कन्ध पर्याय को छोड़ देते हैं।'' 'अनगार धर्मामृत' में 'शरीर स्तव' के सन्दर्भ में एक श्लोक को उद्धृत करते हुए विशेषार्थ में पं. कैलाशचन्द्रजी सिद्धान्त शास्त्री ने लिखा है कि - ''मैं उन जिनेन्द्रों को नमस्कार करता हूँ जिनके मुक्त होने पर शरीर के परमाणु बिजली की तरह स्वयं ही विशीर्ण हो जाते हैं।'' 'मेरु मन्दर पुराण' में लिखा है कि - वैजयंत मुनि के मोक्ष जाने के बाद उनके शरीर के पड़े हुए नख, केश को केवल नमस्कार कर पुतला बना करके अग्निकुमार देवों ने मुकुटानल से दाह संस्कार किया और उसकी भस्म को अपने मस्तक पर लगा, परिनिर्वाण पूजा करके, चतुर्णिकाय देव अपने-अपने स्थान को चले गए तथा उसी पुराण में और भी लिखा है कि सयोग केवली गुणस्थान के अनन्तर वे दोनों मंदर और मेरु मुनि अन्तर्मुहूर्त में 85 कर्म प्रकृतियों का नाश कर ऊर्ध्वगमन करके सिद्धशिला पर विराजमान हो गए। उस समय अग्निकुमार देव तथा मनुष्य सभी मिलकर जिस स्थान पर निर्वाण हुआ था, आ गए। स्वर्णहार, चन्दन के सुगंधित द्रव्य, पुष्पहार, कपूर आदि द्रव्यों से भगवान् के नख और केशों को लेकर भगवान् का कृत्रिम पुतला बनाया और अग्निकुमार

देवों ने उसको जला दिया। तत्पश्चात् उन देवों ने उस भस्म को अपने ललाट पर लगाया और विधिपूर्वक निर्वाण कल्याणक की पूजा करके वे देव अपने-अपने स्थान को चले गए।

महाकवि पद्म ने अपनी कृति 'महावीर रास' ( रचनाकाल ईस्वी सन् 1552 ) में लिखा है कि जिनेन्द्र भगवान् का शरीर परमौदारिक था, अतः वह उसी तरह विघट गया जिस तरह कपूर या आकाश में मेघ विघट जाता है। तदनन्तर भक्ति के वशीभूत होकर देवों ने जिनेन्द्र भगवान् का मायामयी शरीर रचा और उसे पालकी में स्थापित किया, फिर हर्षित मन से उसकी पूजा की। कालागरु, हरिचन्दन, कपूर आदि सामग्री से चिता बनाई और अग्निकुमार देवों के मुकुट से अग्नि प्रज्ज्वलित कर शरीर-दहन की विधि की और 'हमें भी ऐसा ही निर्वाण हो' ऐसी भावना की।

हिन्दी में लिखित पंचमंगल पाठ ( पं. रूपचन्द्रजी ) में निर्वाण कल्याणक के सम्बन्ध में लिखा है -

तनु परमाणु दामिनिवत सब खिर गए,
रहे शेष नख केश रूप जे परिणाये।

प्रतिष्ठा तिलक, प्रतिष्ठासार संग्रह एवं प्रतिष्ठा चन्द्रिका में भगवान् के मोक्ष जाने पर नख, केशों के अग्नि संस्कार करने की क्रिया लिखी गई है जो वर्तमान में समस्त पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठाओं में की जाती है।

उपर्युक्त कथनों के अलावा प्रथमानुयोग के कुछ ग्रन्थों में तो सिर्फ इतना ही लिखा मिलता है कि केवली भगवान् के मोक्ष होने पर इन्द्रादिक देवताओं ने आकर उनके निर्वाण कल्याणक की पूजा की।

# सिद्धक्षेत्रों के पते

1. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, सम्मेदशिखर
   पो. मधुवन 825329 जिला-गिरिडीह ( झारखण्ड )
   शाश्वत सम्मेदशिखर ट्रस्ट - 094311-51436
   तेरापंथी कोठी - 232291, मध्यलोक संस्थान - 232257
   बीसपंथी कोठी - 06558-232228, 232209, 232361
   उत्तरप्रदेश प्रकाश भवन - 232366
   दिगम्बर जैन म्यूजियम शोध समिति - 232253
   चौपड़ा कुण्ड - 232261
2. श्री दिगम्बर जैन बीस पंथी सिद्धक्षेत्र मंदिर, चम्पापुर, छपरा
   वाला ट्रस्ट कोठी, पो. नाथनगर, 812006
   जिला-भागलपुर ( बिहार ) 0641-2500241
3. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गुणावा जी
   मु.पो.- गुणावा 805110 जिला-नवादा ( बिहार )
   06324-213160
4. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कमलदहजी
   सुदर्शन पथ, गुलजारबाग, पटना 800007 ( बिहार )
   0612-2635309
5. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मन्दारगिरि
   मु. - मन्दारगिरि पो.-बौसी, 813104 जिला - बॉका ( बिहार )
   06424-237712, 098356-39714
6. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र राजगृही
   पो. - राजगृही 803116 जिला-नालन्दा ( बिहार )
   06112-255235, 255783

7. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कोल्हुआ पहाड़
पो.-दन्तार 825401 तह.-जोरी, जिला-चतरा ( झारखण्ड )
06546-240840, 093044-82929

8. श्री पावागढ़ दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र
कोठी पावागढ़ 389360 तहसील - हालोल
जिला-पंचमहल ( गुज. ) 02676-245624

9. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र शत्रुंजय जी
पालीताना 364270जि.-भावनगर ( गुज. ) 02848-252547

10. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कोठी तारंगाजी
मु.पो. - तारंगा टेम्पल 384350
तह. सतलसणा, जि. मेहसाणा ( गुज. ) 02761-295073

11. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, गिरनार जी
362001 जि.-जूनागढ़( गुज. ) 0285-2654108, 2621519

12. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलगिरि कुण्डलपुर
ग्राम-कुण्डलपुर 470773 तह. -पटेरा, जिला -दमोह ( म.प्र. )
07605-272227, 272230, 272293

13. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र अहारजी
पो.-अहारजी 472001 तह.- बल्देवगढ़
जि.-टीकमगढ़( म. प्र. ) 07683-224474

14. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि
ग्राम-सेंधपा 471311 तह.-बिजावर, जिला छतरपुर ( म.प्र. )
07689-280972, 252206, 09425144006

15. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिरि ( नैनागिरि )
ग्राम-नैनागिरि 471318 तह.-बिजावर,जि.-छतरपुर, ( म.प्र. )
07583-280095, 280026

16. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट
पो. मान्धाता 450554 ओंकारेश्वर, जिला खण्डवा ( म.प्र. )
07280-271829, 280046, 94254-50776

17. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पावागिरिजी ( ऊन )
ग्राम-ऊन 451440जिला-खरगोन ( म.प्र. )07282-261328

18. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिरिजी
ग्राम- सोनागिरि 475669( सिनावल ) जिला-दतिया ( म.प्र. )
07522-262222, 262223, 262375

19. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र बावनगजा ( चूलगिरि )
ग्राम-बावनगजा 451551-जिला बड़वानी ( म.प्र. )
07290-222084, 282084, 282133,94250-90384

20. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि
पो.-थपोड़ा 460220 तह.-भैंसदेही, जिला-बैतूल ( म.प्र. )
07223-221406, 093253-89573

21. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि
413503 तह.-भूम, जिला-उस्मानाबाद ( महा. )
02478-276860

22. श्री दिगम्बर जैन रेवातट सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर
ग्राम-नेमावर 455339 खातेगाँव, जिला-देवास ( म.प्र )
07274-277818, 277991, 9826541550

23. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी
पो. मांगीतुंगी 423302 तह.-सटाणा, जिला-नासिक ( महा. )
02555-242519, 242546, 286531

24. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथा
म्हसरुल 422004 जि.-नासिक ( महा. ) 0253-2530215

25. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र अष्टापद बद्रीनाथ
( बांगड धर्मशाला के पीछे ) ग्राम-बद्रीनाथ
जिला-चमोली ( उत्तरांचल ) 01381-222334

26. अंतिम केवली श्री 1008 जम्बूस्वामी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र
मथुरा चौरासी, कृष्णानगर, मथुरा 281004 ( उ.प्र. )
0565-2420983

27. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पावागिरजी
ग्राम-पावा 284126 तह. तालबेहट, जिला-ललितपुर ( उ.प्र. )
0510-2705016, 099367-62685

28. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र शौरीपुर बटेश्वर
ग्राम-बटेश्वर 283104 तह.-बाह, जिला-आगरा ( उ.प्र. )
बटेश्वर-05614-234717, शौरीपुर-05614-234750

29. श्री खण्डगिरि-उदयगिरि दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र
ग्राम-खण्डगिरि 751030 ( भुवनेश्वर ) जि.-खुरड़ा ( उड़ीसा )
0674-2384530, उपमंत्री-0671-2440983

## मुनि श्री द्वारा रचित, अनुवादित एवं सम्पादित कुछ विशिष्ट कृतियों की दिग्दर्शिका

- **सागर बूँद समाय** – आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के विशिष्ट विचार-सूत्रों की एक संग्रहणीय कृति है। भक्ति, स्वाध्याय, साधना, धर्म, संस्कृति एवं सत् शिव सुन्दर रूप पाँच खण्डों में विभाजित 1245 बोध-वाक्यों की इस कृति का विमोचन भारत के राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने नवम्बर माह, सन् 1995 में भोपाल ( म.प्र. ) में किया था।
- **महायोगी महावीर** – भगवान् महावीरस्वामी के जीवन दर्शन से सम्बन्धित संक्षिप्त सारगर्भित कृति है। भगवान् महावीर स्वामी के 2600 वें जन्म महोत्सव वर्ष पर इस कृति का आलेखन एवं प्रकाशन हुआ। महावीर से सम्बन्धित जानकारी के लिए इसे महावीर डिक्शनरी भी कहा जा सकता है।
- **पर्युषण के दश दिन** – दशधर्मों की सरल सुबोध और सारगर्भित व्याख्या की एक प्रतिनिधि कृति है। पर्युषण के दिनों में त्यागी व्रती और विद्वानों के साथ-साथ सामान्य जन के भी काम आने वाली अनुपम कृति मुनिश्री के द्वारा सृजित है।
- **अनुप्रेक्षा प्रवचन** – बारह भावनाओं पर दिए गये बारह प्रवचनों की एक मौलिक विशिष्ट कृति।
- **हरियाली हिरदय बसी** – चातुर्मास काल में आने वाले पर्व, त्यौहारों या विभिन्न अवसरों पर प्रदत्त प्रवचनों का अनूठा संग्रह।
- **जैन तत्त्वबोध** – जैनधर्म के आचार-विचार तथा ऐतिहासिक परम्पराओं के प्रामाणिक उल्लेखों से समन्वित यह कृति संक्षिप्त, सरल और सारगर्भित है। यह कृति निश्चित ही जैनधर्म

के के.जी. से पी.जी. के कोर्स की पूर्ति करती है।

- **दिगम्बर जैन मुनि** – मुनिचर्या को दर्शाने वाली एक सरल सुबोध कृति। दिगम्बर मुनि की दिनचर्या से जुड़े हुए विविध आयामी बिन्दुओं का व्यवहारिक और वैज्ञानिक विश्लेषण इस कृति में अपने आप में अनूठा है।
- **कथा तीर्थंकरों की** – चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों के तीन भवों से सम्बन्धित जीवन ( कथानक ) को रेखांकित करने वाली एक विशिष्ट कृति।
- **शलाका पुरुष** – जैन परम्परा में वर्णित 63 शलाका पुरुषों के जीवन चरित्र को निरूपित करने वाली कृति।
- **बारस अणुवेक्खा** – आचार्य प्रवर कुन्दकुन्द स्वामी विरचित इस ग्रन्थ का दोहानुवाद, अन्वयार्थ, भावार्थ सहित विशिष्ट प्रकाशन।
- **भक्तामर प्रश्नोत्तरी** – आचार्य प्रवर मानतुंग विरचित संस्कृत स्तोत्र ( भक्ति काव्य ) का दोहानुवाद सहित प्रश्नोत्तरी ग्रन्थ। इसमें 48 काव्यों पर आधारित प्रश्नोत्तरी में प्रासंगिक विषय की विवेचना की गई है।
- **स्तुति निकुंज** – अर्थ सहित विभिन्न स्तोत्र, पाठ आदि के रूप में संयोजित एक अत्यन्त उपयोगी कृति।
- **बेजुवानों की बात** – दया, करुणा, शाकाहार जैसे मानवीय धर्मों की प्रस्तुति कारक एक विशिष्ट संग्रहणीय कृति, जिसमें कत्लखानों और हिंसा के दुष्परिणामों को दर्शाया गया है।
- **पंचकल्याणक** – तीर्थंकर भगवन्तों के गर्भ, जन्म आदि अवसरों पर होने वाले प्रभावोत्पादक अतिशयकारी कल्याणक-कार्यों का कथन करने वाली सारगर्भित एक लघु पुस्तिका।

## गुरुवर साहित्य प्रकाशन ( स्थायी स्तंभ )

1. चौधरी रमेशचंद्र जैन, अशोकनगर ( म.प्र. )
2. निर्मलचन्द सराफ, सतना
3. राजेन्द्र जैन ( गृहशोभा ), सतना
4. सिंघई अजितकुमार जैन, कटनी
5. सिंघई सुधीरकुमार जैन, कटनी
6. राजीव जैन ( लकी बुक डिपो ), ललितपुर
7. प्रो. आर. के. जैन, विदिशा
8. छिकोड़ी लाल जैन, गोटेगांव ( म.प्र. )
9. रूपेन्द्र मोदी, नागपुर
10. संजय जैन, संजय क्रॉकरी, विदिशा
11. पवन जैन ( कान्हीवाडा वाले ), नागपुर
12. श्रीमति शकुन्तला जैन ( जैन मेडम ), सिवनी
13. श्री अजित आदिनाथ केटकाळे, इचलकरंजी ( महा. )
14. श्री प्रथमेश धामने, इचलकरंजी ( महा. )
15. सौ. किरण ऋषभ सिंघई, जैन संस, पुसद
16. कल्याण जैन ( नेशनल टाईपिंग ) विदिशा
17. नेमीचन्द जैन ( महावीर ट्रेडर्स ) शमशाबाद
18. अभय जैन ( कॉन्ट्रॅक्टर ), भोपाल
19. श्रीमती वसन्तीबाई गोपालराव काळे, अमरावती

अन्य प्राप्तिस्थान :

वर्धमान ( गोल्डी ) कटनी, 09425152940, विनोद जैन पत्रकार, खुई 09425452751, राजीव जैन, ललितपुर, 09838020202, सोनू सिंघई,नागपुर, 09423401297, वीरेन्द्र सिंगल्कर, नागपुर 09422807850, ब्र. तात्याजी, सांगली, 09422616167, सुदेश गुळकरी,कारंजा,09850551302, पारस तोरावत अकोला, 09175175096,राजेन्द्र काला,जालना 09850712495

## मुनि श्री समतासागरजी महाराज

13 जुलाई, 1962 ( वि.सं. 2012 ) को नन्हीं देवरी, सागर ( म.प्र. ) में जन्मे मुनि श्री समतासागरजी नगर सागर ( ग्रीष्मावकाश 1980 ) में आचार्य श्री का सान्निध्य पाकर प्रभावित हुए। सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि में संघ में सम्मिलित हो, ढाई वर्ष तक गुरुवर की आशीष-छाया में स्वाध्याय साधना करते रहे। सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर ( झारखण्ड ) में 10 फरवरी, 1983 को एलक दीक्षा एवं इसी वर्ष निकटस्थ 'ईशरी' नगर में चातुर्मास के मध्य 25 सितम्बर ( कुँ.व. 3 ) को जैनेश्वरी मुनि दीक्षा प्राप्त की। गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रभावक शिष्य मुनि श्री समतासागरजी कुशल वक्ता, एक अच्छे विचारक, लेखक और प्रभावी प्रवचनकार हैं। विभिन्न स्थलों पर चातुर्मास करके युवा पीढ़ी को संस्कारित कर आपने अभी तक जो धर्म प्रभावना की है, वह अद्भुत है।

पूर्व नाम : प्रवीणकुमार
माता-पिता : श्रीमति चिरौंजाबाई( चन्द्रानी ) - श्री राजाराम जैन
चाचा : शीतलचन्द, उत्तमचन्द, महेन्द्रकुमार, अजितकुमार जैन
शिक्षा : हायर सेकेण्डरी
संघ प्रवेश : सन् 1980 पर्युषणपर्व, सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि ( म.प्र. )
सप्तम प्रतिमा : 11.11. 1982, सिद्ध क्षेत्र नैनागिरि ( म.प्र. )
बड़ेभाई : सुरेन्द्रकुमार जैन ( इंजी. ) - सौ. सुनीता जैन बिलासपुर ( छ.ग. )
बड़ी बहिन : सौ. माया - श्री सुरेश जैन, दमोह ( म.प्र. )
छोटी बहिनें : ममताजी- आर्यिका संयममतिजी
सुनीताजी-आर्यिका स्वभावमतिजी
( संघस्थ- आर्यिका दृढ़मतिजी ) एवं ब्र.बबीताजी ( संयम मार्ग में साधनारत )

**कृतियाँ-संयोजन :** सागर बूँद समाय ( विमोचन : राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा 1995 भोपाल ), सर्वोदय सार, तेरा सो एक, श्रावकाचार कथा कुंज, स्तुति निकुंज, बेजुबानों की बात, सुप्रभाती, समाधितन्त्र, पर्युषण आराधना, स्वयंभूसार, आचार्य शान्तिसागर-सन्देश और समाधि, परमेष्ठी पूजन, निर्वाण भूमियाँ।

**आलेखन :** विलक्षण हैं दशलक्षण, सार संचय, समझें इसे हम वर्ष भर, शलाका पुरुष, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, कथा तीर्थंकरों की, महायोगी महावीर ( विमोचन-मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, सन् 2001, टीकमगढ़ ), द्रव्यसंग्रह प्रश्नोत्तरी, तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव, जैनधर्म : शास्ता और सिद्धान्त, चातुर्मास स्थापना विधि, वात्सल्य पूर्णिमा, मूकमाटी-मुक्ति की मंगल यात्रा। **प्रवचन :** प्रवचन पथ, हरियाली हिरदय बसी, चातुर्मास के चार चरण, पर्युषण के दश दिन ( विमोचन : राज्यपाल श्री महावीर भाई, सन् 1999, भोजपुर, भोपाल ), अनुप्रेक्षा प्रवचन। अनेक जैनग्रंथों का दोहानुवाद। गीत, गजल, मुक्तक, कविता आदि विधाओं में अनेक काव्य संग्रह। मुनिश्री के साहित्य पर अब तक दो पी-एच.डी. हुई।